गोंय विद्यापीठ
ताळगांव पठार
गोंय - ४०३ २०६
फोनः +९१-८६६९६०९०४८

Goa University
Taleigao Plateau, Goa - 403 206
Tel : +91-8669609048
Email : registrar@unigoa.ac.in
Website: www.unigoa.ac.in

(Accredited by NAAC)

GU/Acad –PG/BoS -NEP/2023/75/1 Date:23.05.2023

Ref: GU/Acad –PG/BoS -NEP/2022/339/4 dated 18.08.2022

**CIRCULAR**

In supersession to the above referred Circular, the updated approved Syllabus with revised Course Codes of the **Master of Arts in Marathi** Programme is enclosed.

The Dean/ Vice-Deans of the Shenoi Goembab School of Languages and Literature/ Principals of Affiliated Colleges offering the **Master of Arts in Marathi** Programme are requested to take note of the above and bring the contents of the Circular to the notice of all concerned.

ASHWIN VYAS LAWANDE
Digitally signed by ASHWIN VYAS LAWANDE
Date: 2023.05.23 17:22:48 +05'30'

(Ashwin Lawande)
Assistant Registrar – Academic-PG

To,

1. The Dean, Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.
2. The Vice-Deans, Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.
3. The Principals of Affiliated Colleges offering the Master in Arts in Marathi Programme.

Copy to:

1. The Chairperson, Board of Studies in Marathi.
2. The Programme Director, MA Marathi, Goa University.
3. The Controller of Examinations, Goa University.
4. The Assistant Registrar, PG Examinations, Goa University.
5. Directorate of Internal Quality Assurance, Goa University for uploading the Syllabus on the University website.

**GOA UNIVERSITY**
**SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES AND LITERATURE**
Syllabus for the M. A. Marathi Programme
**NEP 2022-2023**

The thrust areas of the M. A. Marathi Programme include Grammar and Linguistics, Theory of Literature and Translation Studies, Medieval Literature, Christian Marathi Tradition of the 17th Century in Goa, Modern Forms of Literature, Marathi Literature in Goa, Dalit and Folk Literature and Science Fiction in Marathi.

**Scheme of Instruction (Semester System)**
**Choice Based Credit System**

| Course code | Courses | No. of Credits |
|---|---|---|
| **Discipline Specific Core Course** | | |
| **Semester I** | | |
| MAR-500 | मराठी व्याकरणाचा पुनर्विचार<br>Review of Marathi Grammar | 4 |
| MAR-501 | आधुनिक मराठी साहित्याचा इतिहास (१८१८-१९४७)<br>History of Modern Marathi Literature (1818-1947) | 4 |
| MAR-502 | साहित्य सिद्धांत<br>Theory of Literature | 4 |
| MAR-503 | आधुनिक मराठी साहित्यिकाचा अभ्यास (चिं. त्र्यं. खानोलकर)<br>A Study of Modern Marathi Author – (C.T. Khanolkar) | 4 |
| **Semester II** | | |
| MAR-504 | भाषाविज्ञान आणि मराठी भाषा<br>Linguistics and Marathi Language | 4 |
| MAR-505 | आधुनिक मराठी साहित्याचा इतिहास (१९४७-२०२०)<br>History of Modern Marathi Literature (1947-2015) | 4 |
| MAR-506 | साहित्यप्रकाराचा अभ्यास - नाटक<br>A Form of Literature - Drama | 4 |
| MAR-507 | मध्ययुगीन मराठी लेखकांचा अभ्यास<br>A Study of Two Medieval Marathi Authors | 4 |
| **Discipline Specific Optional Courses** | | |
| MAR-521 | लोकसाहित्याचा अभ्यास<br>A Study of Folk Literature | 4 |
| MAR-522 | गोमंतकीय मराठी साहित्य<br>Goan Marathi Literature | 4 |
| MAR-523 | १९६० नंतरचे मराठी साहित्य | 4 |

| | | |
|---|---|---|
| | Marathi Prose and Poetry: Post 1960 | |
| MAR-524 | १७ व्या शतकातील गोमंतकीय ख्रिस्ती मराठी साहित्याचा अभ्यास<br>A Study of $17^{th}$ century Goan Christian Marathi Literature | 4 |
| MAR-525 | मराठीतील दलित साहित्याचा अभ्यास<br>A Study of Dalit Literature | 4 |
| MAR-526 | मराठीतील विनोदी साहित्याचा अभ्यास<br>A Study of Humorous Literature in Marathi | 4 |

| Course code | Courses | No. of Credits |
|---|---|---|
| **Research Specific Elective Course** | | |
| **Semester III and IV** | | |
| MAR-600 | संशोधन पद्धती व तंत्र<br>Research Methodology and Technique | 4 |
| MAR-601 | लोकसाहित्याचे संशोधन<br>Research of Folk Literature | 4 |
| MAR-602 | तौलनिक साहित्याभ्यास<br>Comparative Study of Literature | 4 |
| MAR-603 | स्त्रीवादी मराठी साहित्य : स्वरूप आणि संशोधन<br>Feminist Literature in Marathi : Form and Research | 4 |
| MAR-604 | महानगरीय मराठी साहित्य: स्वरूप आणि संशोधन<br>Metropolitan Literature in Marathi : Form and Research | 4 |
| MAR- 605 | ग्रामीण मराठी साहित्य: स्वरूप आणि संशोधन<br>Rural Literature in Marathi : Form and Research | 4 |
| MAR-606 | मराठीतील नियतकालिके<br>Periodicals in Marathi | 4 |
| MAR-607 | भारतीय साहित्याचा अभ्यास<br>Study of Indian Literature | 4 |
| **Generic Elective Courses**<br>**Semester III** | | |
| MAR-621 | मराठीतील विज्ञानसाहित्य<br>Science Fiction in Marathi | 4 |
| MAR-622 | भाषांतरविद्या<br>Translation Studies | 4 |
| MAR-623 | साहित्याचा समाजशास्त्रीय अभ्यास<br>Sociological Study of Literature | 4 |
| MAR-624 | सर्जनशील लेखन<br>Creative Writing | 4 |
| MAR-625 | सांस्कृतिक अभ्यास आणि प्रवासवर्णने<br>Cultural Study and Travelogues | 4 |

| | | |
|---|---|---|
| MAR-626 | पर्यावरण आणि मराठी साहित्य<br>Environment and Marathi Literature | 4 |
| MAR-627 | वृत्त, छंद आणि काव्याभ्यास<br>Poetic Meters and Study of Poetics | 4 |
| MAR-628 | व्यावसायिक मराठी<br>Professional Marathi | 4 |
| MAR-629 | साहित्याचे प्रकारांतर आणि माध्यमांतर<br>Marathi Literature – Trans-Form and Trans-Media | 4 |
| MAR-630 | वृत्तपत्रलेखन व संपादन कौशल्ये<br>Print Media and Editorial Skills | 4 |
| | Semester IV | |
| MAR-651 | Discipline Specific Dissertation | 16 |

**Semester I**

**DISCIPLINE OF MARATHI**

**Title of the course**: मराठी व्याकरणाचा पुनर्विचार

**Review of Marathi Grammar**

**Course code**: MAR-500

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

**Effective from AY**:2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| आवश्यकता : | विद्यार्थ्यांना मराठी व्याकरणविषयक ज्ञान असणे आवश्यक आहे. तसेच मराठी वर्णमाला माहित असणे आवश्यक आहे. | |
| उद्दिष्ट्ये : | मराठी भाषेच्या व्याकरणाचा वेगवेगळ्या व्याकरणकारांच्या मतमतांतरांच्या आधारे मराठी भाषेच्या व्याकरणाचे पूर्णपणे आकलन करून भाषेतील व्याकरणाचा पुनर्विचार करणे ज्यामुळे वेगवेगळ्या व्याकरणकारांची मतमतांतरे अभ्यासून विद्यार्थ्यांची व्याकरणिक जाणीव वाढीस लागेल. | |
| अभ्यासक्रम : | श्रेयांकन 1: मराठी व्याकरण : तात्त्विक विचार | तासिका |
| | I. व्याकरणाच्या रचनेचे आणि अभ्यासाचे प्रयोजन | २ |
| | II. व्याकरणासाठी आधार भाषा : प्रमाण की बोली ? | २ |
| | III. मराठी व्याकरणाची परंपरा | ३ |
| | IV. व्याकरणाच्या पुनर्विचाराची दिशा | ४ |
| | V. संस्कृत व इंग्रजी व्याकरणाचा मराठी व्याकरणावरील प्रभाव | ४ |
| | श्रेयांकन 2: मराठी व्याकरणः स्थूल रूपरेषा | |
| | I. वर्ण, शब्द, क्रियापद (आख्यात) व प्रयोग | १० |
| | II. विभक्ती, वाक्य | ५ |
| | श्रेयांकन 3: | |
| | अ) वर्णविचार : मराठी वर्णमालेच्या पुनर्विचाराची आवश्यकता | |
| | I. वर्णांचे उच्चारभेद | १ |
| | II. स्वरांच्या ऱ्हस्व – दीर्घत्वामागील तत्त्व | २ |
| | III. वर्णसंख्या, बाराखडीचे स्वरूप | २ |
| | आ) शब्दजाती : विचार आणि पुनर्विचार | |
| | I. नामाचे प्रकार | २ |
| | II. सर्वनाम | २ |
| | III. विशेषण | २ |
| | IV. क्रियाविशेषण | २ |
| | V. शब्दयोगी व केवलप्रयोगी अव्यय | २ |
| | श्रेयांकन क्रमांक 4: अ) विभक्तिविचार : | |
| | I. विभक्ती प्रत्ययावरून की अर्थावरून : मतमतांतरे | १ |
| | II. विभक्तींची संख्या : मतमतांतरे | २ |
| | आ) क्रियापदविचार (आख्यातविचार) व वाक्यविचार | |
| | I. क्रियापदविचार : काळ व अर्थावरून की प्रत्ययावरून | २ |
| | | १ |

| | | |
|---|---|---|
| | II. संयुक्त क्रियापद<br>III. शक्य व प्रयोजक क्रियापद<br>IV. प्रयोग विचार<br>V. कर्ता<br>VI. कर्म व पूरक यांमधील वेगळेपणा<br>VII. वाक्यपृथक्करण, वाक्यातील शब्द चालविणे व त्यांची युक्तायुक्तता. | १<br>३<br>१<br>१<br>३ |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण इत्यादी. | |
| शैक्षणिक फलित: | १. मराठीच्या व्याकरणाचे स्वरूप विद्यार्थ्यांच्या लक्षात येईल.<br>२. मराठीच्या व्याकरणात विवादाचे मुद्दे कोणते आहेत व त्यांचे स्वरूप काय आहे हे विद्यार्थ्यांना समजेल.<br>३. मराठीच्या व्याकरणात कालानुरूप कसे बदल झाले हे लक्षात येईल.<br>४. आधुनिक काळात मराठीच्या व्याकरणात कोणत्या बदलांची आवश्यकता आहे याची जाणीव विद्यार्थ्यांना होईल. | |
| संदर्भ ग्रंथ : | १. अर्जुनवाडकर कृष्ण श्री., 'मराठी व्याकरण वाद आणि प्रवाद', सुलेखा प्रकाशन, पुणे, १९८७<br>२. दीक्षित प्र. ना., 'मराठी व्याकरणः काही समस्या', फडके बुक सेलर, कोल्हापूर,१९८०<br>३. अर्जुनवाडकर कृष्ण श्री., 'मराठी व्याकरणाचा इतिहास', मराठी विभाग, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई, १९९१<br>४. वाळंबे मो. रा., 'मराठी व्याकरण' नितीन प्रकाशन, पुणे, २००७<br>५. आचार्य म. ना., 'मराठी व्याकरणविवेक' संजय प्रकाशन, पुणे, १९९०<br>६. मंगळूरकर अरविंद, 'मराठी व्याकरणाचा पुनर्विचार', पुणे विद्यापीठ, पुणे, १९७८<br>७. गोविलकर लीला, 'मराठीचे व्याकरण', मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे, २००६<br>८. दामले मोरो केशव, 'शास्त्रीय मराठी व्याकरण' रघुनाथ दामोदर यंदे प्रकाशन, पुणे, १९६५<br>९. गोखले द. ना., 'शुद्धलेखनविवेक', सोहम प्रकाशन, पुणे, १९९३ | |

**Title of the course**: आधुनिक मराठी साहित्याचा इतिहास (१८१८-१९४७)

**History of Modern Marathi Literature (1818-1947)**

**Course code**: MAR-501

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

**Effective from AY:** 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| आवश्यकता : | इंग्रजांच्या सत्तास्थापनेनंतर सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षणिक परिवर्तनाचे पडसाद मराठी साहित्यावर उमटले त्यामुळे आधुनिक मराठी साहित्याचा इतिहास जाणून घेणे मराठी विषयांचे अध्ययन करणाऱ्या विद्यार्थ्यांना आवश्यक आहे. | |
| उद्दिष्ट्ये : | १८१८-१९४७ या कालखंडातील मराठी साहित्याच्या प्रेरणा, प्रवाह व प्रवृत्तींचा परिचय करून देणे. | |
| अभ्यासक्रम : | श्रेयांकन 1 : मराठी साहित्य (अव्वल इंग्रजी कालखंड १८१८-१८८५)<br>I. आधुनिक मराठी साहित्याची पूर्वतयारी<br>II. भाषांतरीत साहित्य<br>III. नियतकालिके<br>IV. कविता, कथात्म साहित्य, नाटक व निबंध<br>श्रेयांकन 2: मराठी साहित्य १८८५-१९२०<br>I. केशवसुत व आधुनिक कविपंचक<br>II. हरीभाऊ आपटे आणि अन्य कादंबरीकार<br>III. कथा, नाटक, निबंध, समीक्षा<br>श्रेयांकन 3: मराठी साहित्य १९२०-१९४७<br>I. रविकिरण मंडळ आणि समकालीन कविता<br>II. फडके - खांडेकर युग<br>श्रेयांकन 4 : मराठी साहित्य १९२०-१९४७<br>I. नाटक<br>II. वैचारिक साहित्य आणि समीक्षा<br>III. नवसाहित्याचा प्रारंभ | तासिका<br>२<br>३<br>३<br>७<br><br>६<br>४<br>५<br><br>६<br>९<br><br>४<br>६<br>५ |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण इत्यादी. | |
| शैक्षणिक फलित : | १. आधुनिकता ही संकल्पना विद्यार्थ्यांच्या लक्षात येईल<br>२. विद्यार्थ्यांना वाङ्मयासंदर्भातील उपयोजन लक्षात येईल.<br>३. प्राचीन वाङ्मयाच्या तुलनेत आधुनिक वाङ्मयाचे वेगळेपण विद्यार्थ्यांना समजेल.<br>४. आधुनिक काळात जे वेगवेगळे साहित्यप्रकार व वाङ्मयीन प्रवाह उदयाला आले त्यांचा परिचय विद्यार्थ्यांना होईल. | |
| संदर्भ ग्रंथ : | १. कुलकर्णी गो. म., 'आधुनिक मराठी वाङ्मयाची सांस्कृतिक पार्श्वभूमी', मेहता पब्लिशिंग हाऊस पुणे,१९९४<br>२. पटवर्धन वासुदेव बळवंत, 'काव्य आणि काव्योदय', राजहंस प्रकाशन पुणे, २००७<br>३. काळे के. नारायण, 'नाट्यविमर्श', पॉप्युलर प्रकाशन पुणे, १९६१<br>४. प्रदक्षिणा खंड पहिला, कॉन्टिनेंटल प्रकाशन पुणे, १९९१ | |

| | |
|---|---|
| | ५. पुरोहित के. ज., 'जोशी सुधा, मराठी कथाः विसावे शतक', मॅजेस्टिक प्रकाशन मुंबई, २००४<br>६. जोशी सुधा, 'मराठी कथाः संकल्पना व समीक्षा', मौज प्रकाशन, मुंबई, २०००<br>७. देशपांडे कुसुमावती, 'मराठी कादंबरी- विसावे शतक' साकेत प्रकाशन,<br>८. तेंडुलकर रमेश, 'मराठी रोमॅण्टिक काव्यप्रतिभा', मेहता पब्लिशिंग हाऊस पुणे,१९९१<br>९. देशपांडे अ. ना., 'मराठी वाङ्मयाचा इतिहास (भाग एक व दोन),' व्हिनस प्रकाशन पुणे,१९७०<br>१०. 'मराठी वाङ्मयाचा विवेचक इतिहास – अर्वाचीन काळ', स्नेहवर्धन प्रकाशन पुणे,२००९<br>११. जोग रा. श्री, 'मराठी वाङ्मयाचा इतिहास खण्डः चौथा, खण्ड पाचवा भाग पहिला व दुसरा. महाराष्ट्र साहित्य परिषद पुणे, १९७३<br>१२. 'मराठी वाङ्मयाचा इतिहास खण्ड सहावाः भाग पहिला व दुसरा महाराष्ट्र साहित्य परिषद पुणे, १९७३<br>१३. कुलकर्णी गो. म., पुंडे द. दि., 'वाङ्मयेतिहास सद्यःस्थिती आणि अपेक्षा', मेहता पब्लिशिंग हाऊस पुणे, १९९५ |

**<u>Title of the course</u>**: <u>साहित्य सिद्धांत</u>

**<u>(Theory of Literature)</u>**

**Course code**: MAR-502

**Number of credits**: 4 Number of hours: 60

**Effective from AY:** 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| आवश्यकता : | साहित्यशास्त्राला फार प्राचीन व श्रेष्ठ अशी परंपरा लाभलेली आहे. या परंपरेत जे साहित्यशास्त्रीय सिद्धांत मांडले आहेत, त्या सिद्धांतासंबंधीच्या मूलभूत प्रश्नांचे आकलन विद्यार्थ्यांना करून देऊन साहित्याचा अभ्यास अधिक समृद्ध करण्यासाठी या अभ्यासक्रमाची आवश्यकता आहे. | |
| उद्दिष्ट्ये : | साहित्य सिद्धांतांच्या ह्या अभ्यासक्रमाचे महत्त्व म्हणजे वेगवेगळ्या सिद्धांतांचे, संकल्पनेचे आणि साहित्य सिद्धांत विषयक विचारांचे परिष्कृत रूप विद्यार्थ्यांना सूत्ररूपाने समजावून देणे. | |
| अभ्यासक्रम : | | तासिका |
| | श्रेयांकन1: साहित्याची प्रकृती | |
| | I. ललित व ललितेतर साहित्य | ३ |
| | II. साहित्यकृतीतील कलात्मकता व रंजकता | ३ |
| | III. साहित्यनिर्मिती व आस्वाद यांतील कल्पनाशक्तीचे कार्य | ३ |
| | IV. भावनाजागृती सिद्धांत, कॅथार्सिस व प्रेरणा संतुलनाचा सिद्धांत व रससिद्धांत | ६ |
| | श्रेयांकन 2: साहित्याचे प्रयोजन | |
| | I. भारतीय प्रयोजने | ७ |
| | II. पाश्चात्य प्रयोजने | ८ |
| | श्रेयांकन 3: साहित्यातील प्रवृत्ती व विचारसरणी | |
| | I. अभिजातवाद | २ |
| | II. सौंदर्यवाद | ३ |
| | III. वास्तववाद | २ |
| | IV. अतिवास्तववाद | २ |
| | V. अस्तित्ववाद | ४ |
| | VI. आधुनिकतावाद | २ |
| | श्रेयांकन 4 : साहित्याचे मूल्यमापन | १५ |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण इत्यादी. | |
| शैक्षणिक फलित : | १. साहित्याच्या संदर्भात सौंदर्याची संकल्पना विद्यार्थ्यांना स्पष्ट होईल.<br>२. वेगवेगळ्या साहित्य सिद्धांतांचे (भारतीय व पाश्चात्य) स्वरुप विद्यार्थ्यांना समजेल.<br>३. विद्यार्थ्यांना साहित्याची संकल्पना नेमकेपणांने स्पष्ट होईल.<br>४. वाङ्मयातील 'वाद' संकल्पना लक्षात येईल व त्या आधारे साहित्याचे मूल्यमापन करण्याची दृष्टी विकसित होईल. | |
| संदर्भ ग्रंथ : | १. करंदीकर गो. वि., 'अरिस्टॉटलचे काव्यशास्त्र', मौज प्रकाशन मुंबई, १९७८ | |

| | |
|---|---|
| | २. रसाळ सुधीर, 'कविता आणि प्रतिमा', मौज प्रकाशन मुंबई, १९८२<br>३. रेगे पु. शि., 'छांदसी', मौज प्रकाशन मुंबई, १९६८<br>४. धायगुडे सुरेश, 'पाश्चात्य साहित्यशास्त्र सिध्दांत व संकल्पना', निर्भय प्रकाशन पुणे, १९९०<br>५. शिरवाडकर के. रं., 'मार्क्सवादी साहित्यविचार', कॉन्टिनेंटल प्रकाशन पुणे, १९८०<br>६. मेदककर प्रकाश (संपा), 'मूल्यसंकल्पना आणि साहित्यविचार (डॉ. बाळकृष्ण कवठेकर गौरवग्रंथ)'<br>७. जाधव रा. ग. 'वाङ्मयीन आकलन', वाङ्मय सेवा प्रकाशन नाशिक, २००६<br>८. रायकर सीताराम, यादव आनंद, टापरे पंडित, पुंडे द. दि. (संपा), 'वाङ्मयीन वादः संकल्पना आणि स्वरूप', मेहता पब्लिशिंग हाऊस पुणे, १९९०<br>९. हातकणंगलेकर म. द., 'वाङ्मयीन शैली आणि तंत्र (संपा)', अभिजात प्रकाशन कोल्हापूर, १९८१<br>१०. पाटील गंगाधर, 'समीक्षेची नवी रूपे', मॅजेस्टिक प्रकाशन मुंबई, १९८१<br>११. कुळकर्णी वा. ल., 'साहित्य स्वरूप व समीक्षा', पॉप्युलर प्रकाशन पुणे, १९७५<br>१२. भागवत श्री. पु., रसाळ सुधीर, पाडगावकर मंगेश, तेंडुलकर शिल्पा, कीर्तने अंजली (संपा), 'साहित्यः अध्यापन व प्रकार', पॉप्युलर प्रकाशन पुणे, १९८७<br>१३. शिरवाडकर के. रं., 'साहित्यवेध', मेहता पब्लिशिंग हाऊस पुणे, १९९८<br>१४. पाटणकर वसंत, 'साहित्यशास्त्रः स्वरूप व समस्या', पद्मगंधा प्रकाशन पुणे, २०११<br>१५. मालशे स. गं., 'साहित्यसिध्दांत', महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृती मंडळ मुंबई, १९८२<br>१६. नेमाडे भालचंद्र, 'साहित्याची भाषा', साकेत प्रकाशन औरंगाबाद, १९८७<br>१७. ढवळे वि. ना., 'साहित्याचे तत्त्वज्ञान', कॉन्टिनेंटल प्रकाशन पुणे, १९८४<br>१८. थोरात हरिश्चंद्र, 'साहित्याचे संदर्भ', मौज प्रकाशन मुंबई, २००५<br>१९. मर्ढेकर बा. सी., 'सौंदर्य आणि साहित्य', मौज प्रकाशन मुंबई, १९९२ |

**Title of the course**: एका आधुनिक मराठी साहित्यिकाचा अभ्यास (चिं. त्र्यं. खानोलकर)

**A Study of Modern Marathi Author – (C.T. Khanolkar)**

**Course code**: MAR-503

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

Effective from AY: 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| आवश्यकता : | वाङ्‌याच्या आकलनासाठी व वाङ्‌मयविषयक जाणिवा प्रगल्भ व्हाव्यात यासाठी एका लेखकाचा साहित्यविषयक दृष्टीकोण समजणे आवश्यक आहे. | |
| उद्दिष्ट्ये : | एका लेखकाच्या विविध साहित्यकृतींचा सर्वांगाने अभ्यास करणे. | |
| अभ्यासक्रम : | | तासिका |
| | श्रेयांकन 1: अ) लेखक अभ्यासाचे स्वरूप | ३ |
| | आ) कवितासंग्रह | |
| | I. दिवेलागण | ५ |
| | II. नक्षत्रांचे देणे | ७ |
| | श्रेयांकन 2: नाटक | |
| | I. एक शून्य बाजीराव | ८ |
| | II. अवध्य | ७ |
| | श्रेयांकन 3: कादंबरी | |
| | I. कोंडुरा | ८ |
| | II. त्रिशंकू | ७ |
| | श्रेयांकन 4: कथासंग्रह | |
| | I. राखी पाखरू | ८ |
| | II. सनई | ७ |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण इत्यादी. | |
| शैक्षणिक फलित : | १. विशिष्ट काळाचा त्या काळातील साहित्यिकाच्या जडणघडणीवर कसा परिणाम होतो, हे विद्यार्थ्यांना समजेल.<br>२. विशिष्ट काळ आणि त्या काळातील लिहिले जाणारे साहित्य यामधील अनुबंध विद्यार्थ्यांच्या लक्षात येईल.<br>३. एखाद्या विशिष्ट साहित्यिकाच्या साहित्याचा अभ्यास कसा करावा हे समजेल.<br>४. विद्यार्थ्यांमध्ये चिकित्सक दृष्टी विकसित होईल. | |
| संदर्भ ग्रंथ : | १. वैद्य माधवी, आरती प्रभूंची कविता, नीहारा प्रकाशन, पुणे<br>२. पाध्ये प्रभाकर आत्माराम , कादंबरीकार खानोलकर, नूतन प्रकाशन, पुणे, १९७७<br>३. वैद्य माधवी, खानोलकरांची कादंबरी, नीहारा प्रकाशन, पुणे<br>४. वैद्य माधवी, खानोलकरांचे नाटक, नीहारा प्रकाशन, पुणे<br>५. घारे दीपक, चि. त्र्यं. खानोलकारांचे ललित चरित्र, ग्रंथाली प्रकाशन, १९८८<br>६. दडकर जया, चि. त्र्यं. खानोलकारांच्या शोधात, मौज प्रकाशन, १९८३<br>७. दडकर जया, चिं. त्र्यं. खानोलकर आदिपर्व, मौज प्रकाशन, पुणे, २०२१ | |

**Semester II**

**Title of the course**: भाषाविज्ञान आणि मराठी भाषा

**Linguistics and Marathi Language**

**Course code**: MAR-504

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

**Effective from AY**: 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| आवश्यकता : | साहित्याच्या अभ्यासाच्या जोडीला भाषाविज्ञानाचा अभ्यास करणे आवश्यक आहे. मानवी ज्ञानप्रक्रिया, सांस्कृतिक जीवन, सामाजिक जीवन इत्यादी गोष्टी भाषेमुळे शक्य होत असल्याने भाषाविज्ञान ह्या आंतरविद्याशाखीय अभ्यासशाखेची आवश्यकता आहे. | |
| उद्दिष्ट्ये : | भाषिक सामग्रीचे संकलन, विश्लेषण, निरीक्षण, वर्गीकरण सिध्दांत इत्यादी तांत्रिक कौशल्य शिकविणे.<br>- भाषेच्या प्रादेशिक भेदांची कल्पना देणे.<br>- भाषेच्या इतिहासाची मांडणी करणे.<br>- भाषिक परिवर्तनाचे स्वरूप समजावून देणे. | |
| अभ्यासक्रम : | | तासिका |
| | श्रेयांकन 1: भाषाविज्ञान – स्वरूप, पद्धती व कार्य | |
| | I. भाषाशास्त्र आणि भाषाविज्ञान या संज्ञेतील साम्यभेद | ५ |
| | II. ध्वनिपरिवर्तन : आंतरिक व बाह्य कारणे, ध्वनिपरिवर्तनाचे प्रकार, वैशिष्ट्ये | ५ |
| | III. अर्थमीमांसा किंवा शब्दप्रक्रिया : प्रकार, परिवर्तने व उदाहरणे | ५ |
| | श्रेयांकन 2: ऐतिहासिक भाषाविज्ञानाची मूलतत्त्वे | |
| | I. भाषाकुलसंकल्पना आणि जागतिक भाषांचे वर्गीकरण | ८ |
| | II. मराठीचे कालिक भेद : सोदाहरण तात्त्विक विवेचन | ७ |
| | श्रेयांकन 3: वर्णनात्मक भाषाविज्ञानाची मूलतत्त्वे | |
| | I. स्वनिमविचार | ८ |
| | II. पदिमविचार | ७ |
| | श्रेयांकन 4: सामाजिक भाषाविज्ञान | |
| | I. प्रमाणभाषा व बोली यांचे परस्पर संबंध | ५ |
| | II. मराठीचे प्रादेशिक भेद | ५ |
| | III. मराठीच्या बोली : सोदाहरण विवेचन | ५ |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण इत्यादी. | |
| शैक्षणिक फलित : | १. भाषाविज्ञान या ज्ञान शाखेचा परिचय विद्यार्थ्यांना होईल.<br>२. भाषेच्या जडणघडणीमागील भाषावैज्ञानिक तत्त्वे विद्यार्थ्यांच्या लक्षात येतील. | |

| | |
|---|---|
| | ३. विद्यार्थ्यांना भाषाविज्ञान व भाषा यांचा संबंध समजेल .<br>४. भाषेच्या शास्त्रशुद्ध अभ्यासाचा दृष्टिकोन विद्यार्थ्यांमध्ये विकसित होईल. |
| संदर्भ ग्रंथ : | १. धोंडगे रमेश, 'अर्वाचीन मराठीः एक भाषावैज्ञानिक अभ्यास', कॉन्टिनेंटल प्रकाशन पुणे, १९८३<br>२. मालशे मिलिंद, 'आधुनिक भाषाविज्ञानः सिध्दांत आणि उपयोजन', लोकवाङ्मयगृह मुंबई, २००९<br>३. कालेलकर ना. गो., 'भाषा आणि संस्कृती', मौज प्रकाशन मुंबई, १९८२<br>४. कालेलकर ना. गो., 'भाषाः इतिहास व भूगोल', मौज प्रकाशन मुंबई, १९६४<br>५. सोमण अंजली, इनामदार हे. वि., मालशे स. गं., 'भाषाविज्ञानः वर्णनात्मक व ऐतिहासिक' संजय प्रकाशन पुणे, १९८२<br>६. केळकर अशोक, 'मध्यमा', मेहता पब्लिशिंग हाऊस पुणे, १९९६<br>७. कानडे मु. श्री., 'मराठी भाषिक अभ्यास', स्नेहवर्धन प्रकाशन पुणे, १९९४<br>८. गोसावी र. रा., 'मराठीचे ऐतिहासिक भाषाशास्त्र', मोघे प्रकाशन पुणे, १९७६<br>९. लद्दू सुहासिनी, 'मराठीच्या प्रमाणभाषेचे स्वरूप', स्नेहवर्धन प्रकाशन, पुणे<br>१०. काळे कल्याण, अंजली सोमण, 'वर्णनात्मक भाषाशास्त्रः स्वरूप व पद्धती'<br>११. केळकर अशोक, 'वैखरी', मॅजेस्टिक प्रकाशन मुंबई, १९८३<br>१२. वरखेडे रमेश, 'समाजभाषाविज्ञान', शब्दालय प्रकाशन श्रीरामपूर, २०११<br>१३. पुंडे, द. दि., 'सुलभ भाषाविज्ञान', स्नेहवर्धन प्रकाशन, पुणे, १९८५. |

**Title of the course**: आधुनिक मराठी साहित्याचा इतिहास (१९४७-२०२०)

**History of Modern Marathi Literature (1947-2015)**

**Course code**: MAR-505

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

**Effective from:** 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| आवश्यकता : | स्वातंत्र्योत्तर काळात झालेले सामाजिक, राजकीय स्थित्यंतराचे पडसाद मराठी साहित्याच्या निर्मितीवर उमटले, त्यामुळे आधुनिक मराठी साहित्याचा इतिहास जाणून घेणे आवश्यक आहे. | |
| उद्दिष्ट्ये : | १९४७-२०२० या कालखंडातील लेखकांचा व त्यांच्या साहित्यकृतींचा सक्षिप्त परिचय देऊन या कालखंडातील प्रवाह व प्रवृत्तींचे अध्ययन करणे. | |
| | | तासिका |
| अभ्यासक्रम : | श्रेयांकन 1: कविता<br>श्रेयांकन 2: कथा व कादंबरी<br>श्रेयांकन 3: नाटक<br>श्रेयांकन 4: साहित्यसमीक्षा | १५<br>१५<br>१५<br>१५ |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण इत्यादी. | |
| शैक्षणिक फलित : | १. स्वातंत्र्योत्तर काळात आधुनिक मराठी वाङ्मयाच्या विकासाची स्थिती गती विद्यार्थ्यांच्या लक्षात येईल.<br>२. वाङ्मयाला प्रभावित करणाऱ्या घटना कोणत्या असतात हे समजेल व त्या नुसार साहित्यात कालानुरूप झालेले बदल विविध साहित्यिक प्रकारांच्या अभ्यासातून विद्यार्थ्यांना समजतील.<br>३. विद्यार्थ्यांना वाङ्मयेतिहासाची संकल्पना स्पष्ट होईल<br>४. विद्यार्थ्यांमध्ये वाङ्मयेइतिहासाच्या लेखनाची दृष्टी विकसित होईल. | |
| संदर्भ ग्रंथ : | १. डहाके वसंत आबाजी, 'कवितेविषयी', स्वरूप प्रकाशन औरंगाबाद, १९९९<br>२. विलास खोले, किशोर सानप (संपा), 'गेल्या अर्धशतकातील मराठी कादंबरी', लोकवाङ्मयगृह मुंबई, २००२<br>३. प्रभूदेसाई विद्या, '१९९० पूर्वीची गोमंतकीय मराठी कादंबरी-एक चिकित्सक अभ्यास', शारदीय वितरण पणजी, १९९०<br>४. जाधव रा. ग., 'निळी पहाट', विजय प्रकाशन नागपूर, १९७८<br>५. बंदिवडेकर चंद्रकांत, 'मराठी कादंबरी चिंतन आणि समीक्षा', मेहता पब्लिशिंग हाऊस पुणे, १९८३<br>६. 'मराठी वाङ्मयाचा इतिहास (खंड सातवा भाग: पहिला, दुसरा, तिसरा, चौथा)', मराठी साहित्य परिषद, पुणे, २०१०<br>७. हातकणंगलेकर, पवार (संपा), 'मराठी साहित्य प्रेरणा व स्वरूप (१९५०-१९७५)', पॉप्युलर प्रकाशन पुणे १९८६<br>८. महाराष्ट्र साहित्य पत्रिका, दलित साहित्य विशेषांक, दिवाळी १९८७<br>९. समकालीन मराठी साहित्य (डॉ. वि. बा. प्रभुदेसाई गौरवग्रंथ) साहित्य प्रसार केंद्र, नागपूर | |

| | |
|---|---|
| | १०. नंदपुरे ईश्वर, 'साहित्यः ग्रामीण व दलित (मदन कुलकर्णी गौरवग्रंथ)', विजय प्रकाशन नागपूर, २००२<br>११. सानप किशोर, मराठी कादंबरीः नव्या दिशा, निर्मल प्रकाशन, नांदेड, २००५<br>१२. देशपांडे प्रकाश केजकर, आधुनिक मराठी कविताः एक विश्लेषण, स्वरूप प्रकाशन औरंगाबाद, २०१२ |

**Title of the course**: साहित्यप्रकाराचा अभ्यास – नाटक

**A Form of Literature – Drama**

**Course code**: MAR-506

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

**Effective from:** 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| आवश्यकताः | साहित्याच्या अध्यापनामध्ये कोणत्याही साहित्यप्रकाराचा सैद्धांतिक अभ्यास करणे आवश्यक ठरते. | |
| उद्दिष्ट्येः | या विषायामध्ये नाटक या साहित्यप्रकाराचे स्वरूप सांगणे, तसेच मराठीतील काही नाटकांचा अभ्यास करणे. | |
| अभ्यासक्रम : | | तासिका |
| | श्रेयांकन 1: | |
| | I. नाटक या साहित्यप्रकाराची संकल्पना व स्वरूप | ५ |
| | II. मराठी नाटकांची परंपरा आणि इतिहास | ६ |
| | III. नाटक या साहित्यप्रकाराचे मूल्यमापन | ४ |
| | श्रेयांकन 2: | |
| | I. कीचकवध – कृष्णाजी प्रभाकर खाडिलकर | ८ |
| | II. संगीत जयद्रथ विडंबन – हिराबाई पेडणेकर | ७ |
| | श्रेयांकन क्रमांक 3: | |
| | I. गिधाडे – विजय तेंडुलकर | ८ |
| | II. तुझे आहे तुजपाशी- पु. ल. देशपांडे | ७ |
| | श्रेयांकन क्रमांक 4: | |
| | I. आरण्यक – रत्नाकर मतकरी | ८ |
| | II. वाडा चिरेबंदी- महेश एलकुंचवार | ७ |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण इत्यादी. प्रत्यक्ष नाट्यावलोकन | |
| शैक्षणिक फलित : | १. साहित्याचे विविध प्रकार मानण्यामागील कारणे विद्यार्थ्यांच्या लक्षात येतील व साहित्य प्रकारांची आवश्यकता ही विद्यार्थ्यांना समजेल.<br>२. नाटक या साहित्य प्रकाराची सैद्धांतिक बैठक विद्यार्थ्यांना परिचित होईल.<br>३. नाट्य लेखनातील विविध प्रवाह, नाट्य लेखनाची विविध वैशिष्ट्ये परिचित होईल.<br>४. नाट्यलेखनाची विविध तंत्रे यांचा सविस्तर परिचय विद्यार्थ्यांना होईल. | |
| संदर्भ ग्रंथ: | १. देशपांडे वि. भा., मराठी नाटक –नाटककार: काळ आणि कर्तृत्व खंड १. दिलीपराज प्रकाशन, पुणे, २००८<br>२. सरदेसाई माया, भारतीय रंगभूमीची परंपरा, स्नेहवर्धन प्रकाशन, पुणे, प्रथमावृत्ती २०१०<br>३. नाईक राजीव, प्रवीण भोळे,( संपा.) भारतीय प्रयोगकलांचा परिचय व इतिहास : | |

| | |
|---|---|
| | नाट्य परिचय, लोक वांङ्मय गृह, पुणे, २०१०<br>४. मांडे प्रभाकर, लोकरंगभूमी : परंपरा, स्वरूप आणि भवितव्य , गोदावरी प्रकाशन,<br>५. साठे, मकरंद, मराठी रंगभूमीच्या तीस रात्री, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई<br>६. देशपांडे, वि. भा. नाट्यरंग, विमल प्रकाशन, पुणे, १९८६.<br>७. कुलकर्णी आरती, नट्यावलोकन, विजय प्रकाशन, नागपूर, २०१८<br>८. भवाळकर तारा, मराठी नाट्य परंपरा शोध आणि आस्वाद,<br>९. मोकाशी मधुकर, दलित रंगभूमी आणि नाट्यचळवळ<br>१०. पाटणकर रा. भा., वसंत कानेटकरांची नाटके : वैविध्य आणि ध्रुवीकरण |

**Title of the course: दोन मध्ययुगीन मराठी लेखकांचा अभ्यास**

**A Study of Two Medieval Marathi Authors**

**Course code**: MAR- 507

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

**Effective from AY** 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| आवश्यकता : | मराठी साहित्याला लाभलेल्या मध्ययुगीन साहित्यकृतींचा आशय व आकृतीबंधाच्या दृष्टीने विचार करणे आवश्यक आहे. | |
| उद्दिष्ट्ये : | मध्ययुगीन साहित्य, समाज भाषा, प्रयोजन याचा विचारविर्मश करणे. | |
| | | तासिका |
| अभ्यासक्रम : | श्रेयांकन 1 : नामदेव गाथा, संपा. हरी श्रीधर शेणोलीकर, साहित्य अकादमी प्रकाशन<br>I. अभंग विभाग : १ ते ३<br>II. अभंग विभाग : ४ ते ५<br><br>श्रेयांकन 2 : नामदेव गाथा, संपा. हरी श्रीधर शेणोलीकर, साहित्य अकादमी प्रकाशन<br>I. अभंग विभाग : ६ ते ९<br>II. अभंग विभाग : १० ते १२<br><br>श्रेयांकन 3 : कृष्णदासशामा विरचीत श्री कृष्णचरित्रकथा संपा. वि. बा. प्रभुदेसाई<br>I. अवस्वरू : १ ते ६<br>II. अवस्वरू : ७ ते ९<br><br>श्रेयांकन 4 : कृष्णदासशामा विरचीत श्री कृष्णचरित्रकथा, संपा. वि. बा. प्रभुदेसाई<br>I. अवस्वरू : १० ते १४<br>II. अवस्वरू : १५ ते १९ | ८<br>७<br><br>८<br>७<br><br>८<br>७<br><br>८<br>७ |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण इत्यादी. | |
| शैक्षणिक फलित : | १. मराठी साहित्याची समृद्ध परंपरा विद्यार्थ्यांच्या लक्षात येईल व मध्ययुगीन साहित्याचे स्वरूप विद्यार्थ्यांना समजेल.<br>२. मराठी साहित्याच्या विकासात मध्ययुगीन साहित्याचे असलेले योगदान विद्यार्थ्यांना ज्ञात होईल.<br>३. विद्यार्थ्यांना मध्ययुगीन मराठी भाषेचे स्वरूप समजेल.<br>४. अभ्यासक्रमात असलेल्या साहित्यकृतींच्या अनुषंगाने मध्ययुगीन मराठी भाषेचा परिचय विद्यार्थ्यांना होईल. | |
| संदर्भ ग्रंथ : | १. गोसावी र. रा., 'पाच भक्तिसंप्रदाय' प्रतिमा प्रकाशन, पुणे २००८<br>२. तुळपुळे शं. गो., 'पाच संतकवी' व्हिनस प्रकाशन, पुणे १९६२<br>३. पठाण यु. म., 'मध्ययुगीन संत साहित्य काही आयाम' स्वरूप प्रकाशन, औरंगाबाद, २००३ | |

| | |
|---|---|
| | ४. तुळपुळे शं. गो., 'मराठी वाङ्मयाचा इतिहास (खंड १)' मराठी साहित्य परिषद, पुणे. २००५<br>५. भावे वि. ल., 'महाराष्ट्र सारस्वत' पॉप्युलर प्रकाशन, पुणे १९६३<br>६. डॉ. वि. बा. प्रभुदेसाई, प्रा. रवींद्र घवी (संपा.) गोमंतकीय मराठी वाङ्मयाचा इतिहास खंड पहिला. (आरंभ ते १९६१)<br>७. गोसावी मदन महाराज, (संपा.) उजळावया आलो वाटा, संस्कृती प्रकाशन, पुणे, २०२२.<br>८. तिफण, संत साहित्य विशेषांक, जुलै ते डिसेंबर २०१२. |

**Discipline Specific Optional Courses**

**Title of the course**: लोकसाहित्याचा अभ्यास

**A Study of Folk Literature**

**Course code**: MAR- 521

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

**Effective from AY:** 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| आवश्यकता : | प्राचीन काळापासून भारतीय लोकजीवनामध्ये निर्माण झालेली लोकवाङ्मयाची परंपरा जाणून घेण्याच्या दृष्टीने या विषयाची आवश्यकता आहे. | |
| उद्दिष्ट्ये : | लोकसाहित्यामध्ये असलेल्या अनेक प्रकारांचा तसेच त्यांच्या आविष्कारांच्या स्वरूपलक्षणांची चर्चा या विषयामध्ये करणे. | |
| | | तासिका |
| अभ्यासक्रम : | श्रेयांकन 1 : लोकसाहित्य<br>I. स्वरूप<br>II. संकल्पना<br><br>श्रेयांकन 2 : लोकसाहित्य अभ्यासाच्या पद्धती<br>I. अभ्यासाच्या पद्धती<br>II. अभ्यास परंपरा<br><br>श्रेयांकन 3: महाराष्ट्रीय व गोमंतकीय लोकसाहित्याचा स्थूल परिचय<br>I. महाराष्ट्रीय लोकसाहित्य<br>II. गोमंतकीय लोकसाहित्य<br><br>श्रेयांकन 4: पाठ्यपुस्तके<br>I. कोकणातील लोककथा- सूर्यकांत आजगांवकर<br>II. मराठी लोकगीत – डॉ. सरोजिनी बाबर | <br>८<br>७<br><br><br>८<br>७<br><br><br>८<br>७<br><br><br>८<br>७ |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण इत्यादी. | |
| शैक्षणिक फलित : | १. विद्यार्थ्यांना लोकसाहित्याची संकल्पना समजेल.<br>२. लोकसाहित्याचे स्वरूप विद्यार्थ्यांना ज्ञात होईल.<br>३. लोकसाहित्याचे अध्ययन व संशोधनाच्या विविध पद्धती यांचा परिचय विद्यार्थ्यांना होईल.<br>४. लोकसाहित्यातील प्रांतिक भेदांचा परिचय विद्यार्थ्यांना होईल. | |
| संदर्भ ग्रंथ: | १. खेडेकर विनायक, 'गोमंतकीय लोककला', गोवा राज्य गोवा, १९८०<br>२. वाकोडे मधुकर, करोगल सुषमा, 'मौखिकता आणि लोकसाहित्य', साहित्य अकादमी दिल्ली, २००१<br>३. सुखठणकर ज. स., 'रूपड्यांची रूपकथा', धी गोवा हिंदू असोसिएशन गोवा, १९८३<br>४. फडते विनायक विठ्ठल, आखाडकर, 'लोककलानंद', विठ्ठल कला आणि सांस्कृतिक मंडळ गोवा. २०२०. | |

| | |
|---|---|
| | ५. मांडे प्रभाकर, 'लोकपरंपरेतील स्त्री प्रतिभा' दिलीपराज प्रकाशन पुणे. १९९०<br>६. व्यवहारे शरद, 'लोकसंस्कृतीचे अंतःप्रवाह', प्रतिमा प्रकाशन पुणे, १९९९<br>७. खेडेकर विनायक, 'लोकसरिता', गोवा कला अकादमी पणजी, गोवा.<br>८. शिंदे विश्वनाथ, 'लोकसाहित्यमीमांसा (भाग एक व दोन)' स्नेहवर्धन प्रकाशन, पुणे, २०१२.<br>९. भागवत दुर्गा, 'लोकसाहित्याची रूपरेषा', मराठी ग्रंथ संग्रहालय मुंबई, १९५६<br>१०. मांडे प्रभाकर, 'लोकसाहित्याचे स्वरूप', गोदावरी प्रकाशन औरंगाबाद, १९८९.<br>११. साने गुरूजी, 'स्त्रीजीवन', इंद्रायणी साहित्य पुणे, १९८०<br>१२. बाबर सरोजिनी, 'मराठी लोककथा' व. ह. गोळे प्रकाशक , पुणे १९७०<br>१३. वाकोडे मधुकर, 'मराठी लोककथा', साहित्य अकादमी दिल्ली, १९९२<br>१४. जाधव सुदाम, 'लोकनाट्य स्वरुप', सुलश प्रकाशन, औरंगाबाद, १९९०<br>१५. बाबर सरोजिनी, 'लोकसाहित्य शब्दकोश', महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कती मंडळ मुंबई, १९७३<br>१६. कालभूत, पुरूषोत्तम, लोकसाहित्य: सिद्धांत आणि रचनाबंध- विजय प्रकाशन नागपूर.<br>१७. खेडेकर विनायक, गोवा संस्कृतीबंध, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे २०१२ |

<u>**Title of the course**: गोमंतकीय मराठी साहित्य</u>

<u>**Goan Marathi Literature**</u>

**Course code**: MAR- 522

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

**Effective from AY:** 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| आवश्यकता : | गोमंतकाच्या भाषिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक वारसा जपणे ही आजच्या काळाची गरज आहे. | |
| उद्दिष्ट्ये : | गोमंतकातील वेगवेगळ्या साहित्यकृतींच्या अभ्यासाद्वारे गोमंतकीय वैशिष्ट्यांचा अभ्यास करणे. | |
| अभ्यासक्रम : | | तासिका |
| | श्रेयांकन 1: गोमंतकीय मराठी साहित्याचा इतिहास | ८<br>७ |
| | श्रेयांकन 2:<br>I. पालाण – शंकर रामाणी (कविता )<br>II. खिडकीतलं जग – सचिन कांदोळकर ( ललित निबंध ) | <br>८<br>७ |
| | श्रेयांकन 3:<br>I. ओरबिन - गजानन देसाई ( कादंबरी)<br>II. फिंगर बाऊल - विठ्ठल गावस (कथा संग्रह ) | <br>८<br>७ |
| | श्रेयांकन 4:<br>I. शिवगोमंतक- विष्णू सुर्या वाघ (नाटक )<br>II. सतीचे वाण - मोहन रानडे (आत्मचरित्र ) | <br>८<br>७ |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण, गोमंतकीय लेखकांशी प्रत्यक्ष संवाद इत्यादी. | |
| शैक्षणिक फलित : | १. विद्यार्थ्यांना गोमंतकीय मराठी साहित्य परंपरेचा परिचय होईल<br>२. गोमंतकीय मराठी साहित्यात कालानुरूप झालेले बदल विद्यार्थ्यांच्या लक्षात येतील.<br>३. अभ्यासक्रमात असलेल्या विविध साहित्यकृतींच्या आधारे गोमंतकीय साहित्याची वैशिष्ट्ये व वेगळेपण विद्यार्थ्यांना ज्ञात होईल.<br>४. प्रादेशिक निकषांच्या आधारे गोमंतकीय मराठी साहित्याचे मूल्यमापन करण्याची दृष्टी विद्यार्थ्यांमध्ये विकसित होईल. | |
| संदर्भ ग्रंथ : | १. ‘आजचा व कालचा गोमंतक’- सातोस्कर बा.द.धी गोवा हिंदू असोसिएशन, मुंबई, १९५४<br>२. ‘गोमंतकीय मराठी वाङ्मयाचा इतिहास खंड १व २, गोमंतक मराठी अकादमी- गोवा, २००३<br>३. सातोस्कर, बा. द. गोमंतकीय मराठी साहित्याचे आधुनिक शिल्पकार- क्रीडा व सांस्कृतिक संचालनालय, गोवा दमण व दीव सरकार, पणजी.<br>४. सातोस्कर बा. द., ‘गोमंतकीय मराठी साहित्याचे शिल्पकार खंड १’ सांस्कृतिक आणि क्रीडा संचालनालय गोवा दमण व दीव सरकार पणजी गोवा, १९८४<br>५. प्रभू सं. रामदास, ‘गोमंतशारदा’, गोमंतक साहित्यसेवक मंडळ गोवा, १९७२ | |

| | |
|---|---|
| | ६. नार्वेकर शशिकांत (संपा), ‘भारतकार हेगडे देसाई यांचे निवडक लेख खंड १ व २’, गोमंतक मरोठी अकादमी गोवा, १९९९<br>७. प्रभूदेसाई विद्या, १९९० पूर्वीचा गोमंतकीय मराठी कादंबरी-एक चिकित्सक अभ्यास, शारदीय वितरण पणजी १९९०.<br>८. अक्षरगाथा, बळीवंश प्रकाशन, नांदेड, ऑक्टोबर-डिसेंबर २०२१<br>९. कुलकर्णी, द. भी. नाटक : स्वरूप आणि समीक्षा,<br>१०. जागतिक, स्तरावर संयुक्त महाराष्ट्राची चळवळ आणि गोवा मुक्ती संग्राम यांचे सांस्कृतिक योगदान , सं. स्नेहल तावरे, स्नेहवर्धन प्रकाशन, पुणे, २०१९.<br>११. मराठी संशोधन पत्रिका, दिवाळी अंक, ऑक्टोबर , नोव्हेंबर, दिसेम्बेर, मराठी संशोधन मंडळ, मुंबई, २०२१.<br>१२. जाधव गजानन,( संपा.) नव्वदोत्तर मराठी कादंबरी (प्रा. डॉ. केशव फाले गौरवग्रंथ), अनघादित्य प्रकाशन, अमरावती.२०२१<br>१३. हेरोळे गजानन(संपा.),नव्वदोत्तर मराठी कथा: रंग आणि अंतरंग(डॉ. रा.गो. चवरे गौरवग्रंथ),गोदा प्रकाशन, औरंगाबाद.२०१८<br>१४. जोशी अनुजा(संपा.),रामाणी: शंकर रामाणी यांची समग्र मराठी कविता, गोवा मराठी अकादमी, पणजी.२०२२<br>१५. अहिरे के.के., कविताव्रती कवी: शंकर रामाणी अथर्व पब्लिकेशन, धुळे. २०११<br>१६. नागवेकर पांडुरंग, गोमंतकाची बखर, शिल्पकार प्रकाशन, गोवा.२०१८<br>१७. कोमरपंत सोमनाथ, मराठी कविता-१९२० रे १९४५ |

**Title of the course**: १९६० नंतरचे मराठी गद्य व पद्य पाठ्यपुस्तके

**Marathi Prose and Poetry: Post 1960**

**Course code**: MAR-523

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

**Effective from AY**: 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| आवश्यकता : | १९६० नंतरच्या काळातील वेगवेगळ्या वृत्ती, प्रवृत्तींचा त्या कालखंडातील साहित्यकृतीद्वारे विचार विमर्श करणे. | |
| उद्दिष्ट्ये : | १९६० नंतरच्या स्थित्यंतराच्या प्रेरणा आणि त्यामधून उदयाला आलेल्या नव्या प्रवृत्ती मराठी साहित्यकृतीद्वारे अभ्यासकापर्यंत पोचविणे. | |
| अभ्यासक्रम : | | तासिका |
| | श्रेयांकन 1: कविता: नंतर आलेले लोक – अरुण काळे | १५ |
| | श्रेयांकन 2: कथा : त्रीपर्ण - मोनिका गजेंद्र गडकर | १५ |
| | श्रेयांकन 3: कादंबरी : कोसला- भालचंद्र नेमाडे | १५ |
| | श्रेयांकन 4: नाटक : अधांतर – जयंत पवार | १५ |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण इत्यादी. | |
| शैक्षणिक फलित : | १. १९६० नंतरच्या साहित्याच्या वाङ्मयीन प्रेरणा विद्यार्थ्यांच्या लक्षात येतील.<br>२. १९६० नंतरच्या साहित्याचे स्वरूप समजेल.<br>३. १९६० नंतरच्या साहित्याचे वेगळेपण विद्यार्थ्यांना समजेल.<br>४. अभ्यासक्रमात असलेल्या पाठ्यपुस्तकांच्या आधारे विद्यार्थ्यांमधील मूल्यमापनाची दृष्टी विकसित होईल. | |
| संदर्भ ग्रंथ : | १. खोले विलास, 'अर्धशतकातील मराठी कादंबरी', लोकवाङ्ग्यगृह मुंबई, २०११<br>२. कुलकर्णी द. भि., 'पार्थिवतेचे उदयास्त', पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई, १९७७<br>३. 'प्रदक्षिणा खंड २', कॉन्टिनेण्टल प्रकाशन, पुणे १९८०<br>४. सोमण अंजली, 'मराठी कथाः स्थितीगती', प्रतिमा प्रकाशन पुणे, १९९५<br>५. देशपांडे प्रकाश, केजरकर, 'आधुनिक मराठी कविताः एक विश्लेषण', स्वरूप प्रकाशन औरंगाबाद<br>६. पवार गो. मा., हातकणंगलेकर म. द., 'मराठी कादंबरीः प्रेरणा व स्वरूप', पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई, १९८६<br>७. देशपांडे वि. भा., तावरे स्नेहल, 'मराठी भाषा आणि साहित्य', मेहता पब्लिशिंग हाऊस पुणे, १९९०<br>८. कुलकर्णी द. भि., ' मराठी कथा स्वरूप आणि आस्वाद', स्वाध्याय प्रकाशन पुणे<br>९. जाधव गजानन,( संपा.) नव्वदोत्तर मराठी कादंबरी (प्रा. डॉ. केशव फाले गौरवग्रंथ), अनघादित्य प्रकाशन, अमरावती.२०२१<br>१०. हेरोळे गजानन (संपा.),नव्वदोत्तर मराठी कथा: रंग आणि अंतरंग (डॉ. रा.गो. चवरे गौरवग्रंथ),गोदा प्रकाशन, औरंगाबाद. २०१८<br>११. भांड बाबा (संपा.) कोसलाबद्दल, साकेत प्रकाशन, १९७९<br>१२. सावंत वासुदेव, उदाहणार्थ कोसला, शब्दालय प्रकाशन, श्रीरामपूर, १९९९.<br>१३. राजाध्यक्ष विजया, मराठी कादंबरीः आस्वाद यात्रा, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, २००८ | |

**Title of the course**: १७व्या शतकातील गोमंतकीय ख्रिस्ती मराठी साहित्याचा अभ्यास

**A Study of 17th century Goan Christian Marathi Literature**

**Course code**: MAR-524

**Number of credits**: 4 Number of hours: 60

**Effective from AY**: 2022-2023

<table>
<tr><td>आवश्यकताः</td><td colspan="2">गोव्याचा भाषिक व सांस्कृतिक इतिहास या दृष्टीने ख्रिस्ती धर्मोपदेशकांनी लिहिलेल्या या वाङ्मयाचा अभ्यास करणे आवश्यक आहे.</td></tr>
<tr><td>उद्दिष्ट्येः</td><td colspan="2">ख्रिस्ती साहित्याचा ऐतिहासिक वाङ्मयीन व भाषिक अभ्यासाच्या दृष्टीने विचार करणे.<br>पोर्तुगीज पूर्वकालिन व पोर्तुगीजकालीन ग्रंथसंपदा जाणून घेणे.</td></tr>
<tr><td>अभ्यासक्रम :</td><td>श्रेयांकन 1:<br>I. मराठीतील ख्रिस्ती वाङ्मयाची पूर्वपीठिका आणि परंपरा<br>II. ख्रिस्ती मिशनऱ्यांनी मराठी वाङ्मयात घातलेली भर<br><br>श्रेयांकन 2:<br>I. ख्रिस्ती मराठी वाङ्मयविषयक संशोधन कार्याचे स्वरूप<br>II. ख्रिस्ती मराठी वाङ्मयविषयक संशोधन<br><br>श्रेयांकन 3: पाठ्यपुस्तके<br>I. क्रिस्ताचे यातनागीत (संपादक- प्रा. अ. का. प्रियोळकर)<br>II. क्रिस्ताच्या वधस्तंभारोहणा प्रसंगीचे विळाप (संपादक- डॉ. वि. भा. प्रभुदेसाई)<br><br>श्रेयांकन 4: पाठ्यपुस्तके<br>I. सांतु आंतोनिची जीवीत्वकथा- पाद्री आतोंनियु द सालादान्ज<br>II. फादर सिमांव गॉमिशविरचित ‘सर्वेश्वराचा ज्ञानोपदेश’ संपादक- डॉ. वि. बा. प्रभुदेसाई</td><td>तासिका<br>८<br>७<br><br><br>८<br>७<br><br><br>८<br>७<br><br><br><br>८<br>७</td></tr>
<tr><td></td><td>एकूण</td><td>६०</td></tr>
<tr><td>अध्यापन पद्धती :</td><td colspan="2">व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण इत्यादी.</td></tr>
<tr><td>शैक्षणिक फलित :</td><td colspan="2">१. विद्यार्थ्यांना पोर्तुगीजपूर्व काळात गोमंतकात अस्तित्वात असलेल्या मराठी ग्रंथसंपदेचे ज्ञान होईल.<br>२. सतराव्या शतकात गोमंतकात निर्माण झालेल्या ख्रिस्ती मराठी वाङ्मय परंपरा विद्यार्थ्यांना समजेल.<br>३. ख्रिस्ती मराठी ग्रंथकारांचा व साहित्याचा परिचय विद्यार्थ्यांना होईल.<br>४. ख्रिस्ती मराठी साहित्यावर झालेल्या संशोधनाचा परिचय विद्यार्थ्यांना होईल.</td></tr>
<tr><td>संदर्भ ग्रंथ-</td><td colspan="2">१. Tadkodkar S. M., ‘Goan Christian Maraathi Vilapika during the 17th century’, B. R. Publishing Corporation Delhi, 2010<br>२. कोंकणमित्र (दिवाळी अंक,१९६६) मांडवी (ऑगस्ट, १९६९)<br>३. मोरजे ना. ग., ‘ख्रिस्ती मराठी वाङ्मय’, अहमद नगर कॉलेज, अहमदनगर, १९८४</td></tr>
</table>

| | |
|---|---|
| | ४. प्रियोळकर अनंत काकबा, 'गोमंतकीय क्रिस्त्यांची मराठी परंपरा',<br>५. प्रभूदेसाई वि. भा., घवी रवींद्र, 'गोमंतकीय मराठी वाङ्मयाचा इतिहास खंड १' गोमंतक मराठी अकादमी, गोवा. २००३<br>६. प्रियोळकर अनंत काकबा, 'जेजुइतांचे मराठी वाङ्मय कार्य (ओझरती ओळख)'<br>७. मालशे स. ग., 'पाद्री थॉमस स्टिफन्स आणि त्याचे ख्रिस्तपुराण'<br>८. प्रियोळकर अनंत काकबा, 'फ्रेंच कवींनी लिहिलेली मराठी पुराणे'<br>९. देशपांडे अ. ना., 'आधुनिक मराठी वाङ्मयाचा इतिहास खंड ४', व्हिनस प्रकाशन पुणे, १९५८<br>१०. प्रभूदेसाई वि. बा., 'सतराव्या शतकातील गोमंतकीय बोली', मुंबई विद्यापीठ, मुंबई. १९६३<br>११. प्रियोळकर अनंत काकबा, 'सांतु आंतुनिची अर्चया'<br>१२. भेंडे सुभाष (संपा.) अ. का. प्रियोळरक स्मृतीग्रंथ, अ. का. प्रियोळरक स्मृतीग्रंथ समिती, मुंबई १९७४<br>१३. भेंब्रे लक्ष्मीकांत, पोर्तुगाली राजवचीपूर्वीचे गोव्यातील धार्मिक वाङमय, गोमंतक मराठी भाषा परिषद, मुंबई, १९७९. |

**Title of the course**: दलित साहित्याचा अभ्यास

**A Study of Dalit Literature**

**Course code**: MAR-525

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

**Effective from AY**: 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| आवश्यकता : | मराठी साहित्यक्षेत्रात आशयाच्या व भाषेच्या दृष्टीने महत्त्वाचा ठरलेला हा प्रवाह अभ्यासणे आवश्यक आहे. | |
| उद्दिष्ट्ये : | पारंपरिक समाजव्यवस्थेपासून उपेक्षित राहूनही साहित्यामध्ये आपल्या वेगळ्या प्रकाराच्या निर्मितीची जाणीव करून देणाऱ्या वेगवेगळ्या जाती-जमातीमधील वैशिष्ट्यांची ओळख करून देणे. | |
| अभ्यासक्रम : | श्रेयांकन 1: दलित साहित्य | तासिका |
| | I. संकल्पना | ८ |
| | II. स्वरूप | ७ |
| | श्रेयांकन 2: दलित साहित्यातील विविध वाङ्मयप्रकारांचा विकास (कविता, कथा, आत्मकथने, नाटके इत्यादी) | १५ |
| | श्रेयांकन 3: पाठ्यपुस्तके | |
| | I. कोंडवाडा- दया पवार | ८ |
| | II. दलित कथा- संपा. गंगाधर पानतावणे, चंद्रकुमार नलगे | ७ |
| | श्रेयांकन 4: पाठ्यपुस्तके | |
| | I. राघववेळ – नामदेव कांबळे | ८ |
| | II. माज्या जल्माची चित्तरकथा – शांताबाई कांबळे | ७ |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण इत्यादी. | |
| शैक्षणिक फलित : | १. दलित साहित्याची संकल्पना विद्यार्थ्यांना स्पष्ट होईल व दलित साहित्याच्या निर्मितीमागील कारणे समजतील.<br>२. दलित साहित्याचे वेगळेपण लक्षात येईल.<br>३. दलित साहित्याची विविध वैशिष्ट्ये अधोरेखित होतील.<br>४. पाठ्यक्रमात असलेल्या साहित्यकृतींच्या आधारे दलित साहित्याचे व्यापक स्वरूप विद्यार्थ्यांच्या लक्षात येईल. | |
| संदर्भ ग्रंथ : | १. मेश्राम केशव, 'अक्षर भाकिते', स्वरूप प्रकाशन औरंगाबाद, १९९९<br>२. बागूल बाबुराव, 'दलित साहित्य: आजचे क्रांतिविज्ञान', बुध्दिस्ट पब्लिशिंग हाऊस नागपुर, १९८१<br>३. पगारे म. सु., दलित साहित्याचा इतिहास, प्रशांत पब्लिकेशन, जळगाव, २००५<br>४. कवठेकर बाळकृष्ण, 'दलित साहित्य: एक आकलन', अजब पुस्तकालय | |

| | |
|---|---|
| | कोल्हापुर,१९८१<br>५. भगत दत्ता, 'दलित साहित्य: दिशा आणि दिशांतर', अभय प्रकाशन नांदेड, १९९२<br>६. सांगोलेकर अविनाश, 'दलित साहित्य: उगम आणि विकास' प्रतिमा प्रकाशन, पुणे, २०१०<br>७. संपा. कुलकर्णी गो. म, 'दलित साहित्य: प्रवाह व प्रतिक्रिया' प्रतिमा प्रकाशन, पुणे, १९८६<br>८. फडके भालचंद्र, 'दलित साहित्य: वेदना व विद्रोह', वनी प्रकाशन, दिल्ली, २०१०<br>९. मांडे प्रभाकर, 'दलित साहित्याचे निराळेपण', धारा प्रकाशन, औरंगाबाद, १९७९<br>१०. जाधव रा. ग., 'निळी पहाट', प्रज्ञा पाठशाळा मंडळ, वाई, १९७८<br>११. महाराष्ट्र साहित्य पत्रिका, दलित साहित्य विशेषांक, दिवाळी, १९८७<br>१२. साहित्य : 'ग्रामीण आणि दलित (मदन कलकर्णी गौरवग्रंथ- ईश्वर नंदपुरे)', विजय प्रकाशन, नागपूर, २००२ |

**<u>Title of the course</u>**: <u>मराठी विनोदी साहित्याचा अभ्यास</u>

**<u>A Study of Humorous Literature in Marathi</u>**

**Course code**: MAR-526

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

Marks: 100 w. e. f. 2022-2023

<table>
<tr><td>आवश्यकता :</td><td colspan="2">विनोदी साहित्य हा साहित्याचा महत्त्वाचा प्रकार आहे. काळानुरूप विनोदी साहित्य नवनव्या शैली आणि रूपात प्रकट झाले. या प्रकाराचा झालेला विकास समजून सांगणे</td></tr>
<tr><td>उद्दिष्ट्ये :</td><td colspan="2">विनोदी साहित्याची परंपरा आणि त्याचे स्वरूपविशेष विद्यार्थ्यांना समजून सांगणे.</td></tr>
<tr><td>अभ्यासक्रम :</td><td>श्रेयांकन 1: विनोदी साहित्य संकल्पना व स्वरूप<br><br>श्रेयांकन 2: मराठीतील विनोदी साहित्याची परंपरा<br><br>श्रेयांकन 3: I) सुदाम्याचे पोहे - श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर<br>II) माझ्या बापाची पेंड - द. मा. मिरासदार<br><br>श्रेयांकन 4: I) व्यक्ती आणि वल्ली- पु. ल. देशपांडे<br>II) बंडू - गंगाधर गाडगीळ</td><td>तासिका<br>१५<br><br>१५<br><br>७<br>८<br><br>८<br>७</td></tr>
<tr><td></td><td>एकूण</td><td>६०</td></tr>
<tr><td>अध्यापन पद्धती :</td><td colspan="2">व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण इत्यादी.</td></tr>
<tr><td>शैक्षणिक फलित :</td><td colspan="2">१. विद्यार्थ्यांना विनोदी साहित्याच्या निर्मितीमागील प्रेरणा स्पष्ट होईल.<br>२. मराठी विनोदी साहित्याची परंपरा समजेल.<br>३. मराठी विनोदी साहित्याचे स्वरूप विद्यार्थ्यांच्या लक्षात येईल.<br>४. विद्यार्थ्यांना विविध विनोदी साहित्य प्रकारांचा परिचय होईल.</td></tr>
<tr><td>संदर्भ ग्रंथ :</td><td colspan="2">१. गाडगीळ गंगाधर, ‘सात मजले हास्याचे’, सुरेश एजन्सी ,पुणे<br>२. पवार गो. मा., ‘विनोद तत्त्व आणि स्वरूप’, मौज प्रकाशन गृह, मुंबई, २००६<br>३. वाजपेयी अशोक, ‘साहित्य विनोद’, नॅशनल पब्लिशिंग हाऊस’, नवी दिल्ली, १९८२<br>४. ‘मराठी वाङ्मयाचा इतिहास खंड सातवा’, महाराष्ट्र साहित्य परीषद, पुणे<br>५. अत्रे प्रल्हाद, विनोद गाथा, परचुरी प्रकाशन, मुंबई, १९७६<br>६. कुलकर्णी उषा, मराठी विनोद, श्रीविद्या प्रकाशन, पुणे, १९९०<br>७. जाधव न., श्रीपादकृष्ण कोल्हटकरांचा विनोद, कौस्तुभ प्रकाशन , नागपूर, १९८२<br>८. वर्टी अ. वा., विनोद एक व्याख्यान, परिमल प्रकाशन, २००४</td></tr>
</table>

**Semester III & IV**

Title of the course: **संशोधन पद्धती व तंत्र**

**Research Methodology and Technique**

**Course code**: MAR-600

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

**Effective From AY:** 2022-2023

<table>
<tr><td>पूर्वापेक्षित :</td><td colspan="2">विद्यार्थ्यांना मराठी विषयाचे ज्ञान व मराठी साहित्याच्या संशोधनाची पूर्वपीठिका माहीत असणे आवश्यक आहे.</td></tr>
<tr><td>उद्दिष्टे :</td><td colspan="2">१. संशोधनाचे स्वरूप स्पष्ट करून संशोधनाचे कार्य, पद्धती व प्रक्रियेचा परिचय करून देणे.<br>२. संशोधनविषयक लेखनाला प्रवृत्त करणे.</td></tr>
<tr><td rowspan="2">अभ्यासक्रम :</td><td></td><td>तासिका</td></tr>
<tr><td>श्रेयांकन १. संशोधनः संकल्पना, स्वरूप व प्रकार<br>१.१ संशोधनाचे स्वरूप<br>१.२ संशोधन, समीक्षा व इतिहास यांतील परस्परसंबंध<br>१.३ संशोधनाचे प्रकार : वैज्ञानिक, सामाजिक व साहित्य संशोधन<br>श्रेयांकन २. संशोधन पद्धती व विविध क्षेत्रे<br>२.१ संशोधन पद्धती : विगमनात्मक, निगमनात्मक, प्रयोगनिष्ठ, वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तौलनिक, पाठचिकित्सात्मक, सर्वेक्षण पद्धती.<br>२.२ वाङ्मयसंशोधनाची अभ्यासक्षेत्रे : साहित्यप्रकारनिष्ठ संशोधन, लेखकनिष्ठ संशोधन, कालखंडानुसार साहित्याचे संशोधन, भाषिक संशोधन, तौलनिक संशोधन, लोकसाहित्याचे संशोधन.<br>श्रेयांकन ३. संशोधन तंत्र व साधनसामग्रीची सिद्धता<br>३.१ ग्रंथालयीन संदर्भसाहाय्य<br>३.२ अभिलेखागारे : ऐतिहासिक कागदपत्रे, ताम्रपट व शिलालेख<br>३.३ संगणकाचा संशोधनातील उपयोग<br>श्रेयांकन ४. संशोधनातील प्रक्रिया<br>४.१ विषयाची निवड<br>४.२ संशोधन लेखन : संशोधन प्रस्ताव तयार करणे, संशोधनविषयक पूर्वसंशोधनाचा मागोवा<br>४.३ संशोधन लेखनाची भाषा<br>४.४ संशोधन लेखनाची संदर्भप्रक्रिया : परिशिष्टे, संदर्भसूची, टीपा, तळटीपा</td><td><br>५<br>५<br>५<br><br>७<br><br><br>८<br><br><br><br>५<br>५<br>५<br><br>३<br>५<br><br>४<br>३</td></tr>
<tr><td></td><td>एकूण</td><td>६०</td></tr>
<tr><td>अध्यापन पद्धती :</td><td>व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईंट सादरीकरण, इत्यादी.</td><td rowspan="2"></td></tr>
<tr><td>शैक्षणिक फलित:</td><td>१. विद्यार्थ्यांना साहित्य संशोधनाचे स्वरूप समजेल.<br>२. साहित्य संशोधन विषयक कार्य व पद्धतीचा परिचय होईल.</td></tr>
</table>

| | | |
|---|---|---|
| | ३. साहित्य संशोधनातील विविध क्षेत्रांचा परिचय होईल.<br>४. संशोधनाविषयीचे लेखनकार्य करण्यास आवश्यक असणाऱ्या विविध तंत्र व साधनांचा परिचय होईल. | |
| **संदर्भग्रंथ:** | १. मालशे, स. गं., शोधनिबंधाची लेखनपद्धती, सुधारित आवृती, संपादन: मिलिंद मालशे, लोकवाङ्मय गृह, २००६.<br>२. जोशी, वसंत, जोगळेकर, गं. न., (संपादित), भाषा व साहित्य संशोधन खंड १, २, ३ महाराष्ट्र साहित्य परिषद १९८१, १९८५, १९८९ .<br>३. संत, दु. का., संशोधन पद्धती, प्रक्रिया व अंतरंग, लोकवाङ्मय गृह, मुंबई,<br>४. कऱ्हाडे, सदा, संशोधन : सिद्धांत आणि पद्धती, लोकवाङ्मय गृह, मुंबई, १९८७.<br>५. चुनेकर, सु. रा., पठारे, रंगनाथ, (संपादित), संशोधन स्वरूप आणि पद्धती, शि. प्र. संस्था, संगमनेर, १९८३.<br>६. चुनेकर, सु. रा., पठारे रंगनाथ, (संपादित), संशोधन प्रक्रिया आणि अंतरंग, शि. प्र. संस्था, संगमनेर, १९८३.<br>७. देशमुख, उषा माधव, साहित्यशोधणी, निहार प्रकाशन, पुणे, १९९४.<br>८. वेलणकर, जया, प्रबंध कसा लिहावा?, साहित्य प्रसार केंद्र, नागपूर, १९८८.<br>९. गुंजाळ, बाबासाहेब, संशोधन : स्वरूप आणि समस्या, शब्दालय प्रकाशन, श्रीरामपूर, २०१४.<br>१०.पाटील, बी. एन., साहित्य संशोधन मार्गदर्शन, प्रशांत पब्लिकेशन,जळगाव, २००८.<br>११.आवलगावकर, अविनाश (संपादित), मराठी साहित्य संशोधन, प्रतिमा प्रकाशन, पुणे, २००६.<br>१२.देशकर, दत्त, संशोधनपद्धतीची मूलतत्त्वे, अजय प्रकाशन, औरंगाबाद, २००६.<br>१३.शेलार, सुधाकर, साहित्य संशोधन : वाटा आणि वळणे, अक्षर वाङ्मय प्रकाशन, पुणे, २०१९.<br>१४.चुनेकर, सु. रा., सूचीची सूची, प्रतिमा प्रकाशन, पुणे, १९९५.<br>१५.कुलकर्णी, वि. वा., मराठी प्रबंध सूची, साहित्य प्रसार केंद्र, नागपूर, २०११.<br>१६.प्रियोळकर, अ. का., रधुनाथ पंडित विरचित दमयंती स्वयंवर, व्हिनस प्रकाशन, पुणे, १९७८.<br>१७.डहाके, वसंत आबाजी, प्रभा गणोरकर, जया दडकर (संपादित) वाङ्मयीन संज्ञा संकल्पना कोष, जी आर. भटकळ फाउंडेशन, मुंबई, २००१.<br>१८.गायकवाड, डि. आर., मराठी शोधप्रबंधाची वर्णनात्मक सूची(१९४७-२००४), निर्मिती संवाद, कोल्हापूर, २०११. | |

**Title of the course**: **लोकसाहित्याचे संशोधन**
**Research of Folk Literature**

**Course code**: MAR- 601
**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60
**Effective from AY:** 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| **पूर्वापेक्षित :** | विद्यार्थ्यांना लोकसाहित्याच्या संशोधनाविषयीची जाण असणे आवश्यक आहे. | |
| **उद्दिष्टे :** | १. लोकसाहित्याच्या स्वरूपाचा परिचय करून देणे.<br>२. लोकसाहित्याच्या संशोधनामागील तत्त्वे अभ्यासणे.<br>३. लोकसाहित्य संशोधनामागील आव्हानांचा परिचय करून देणे. | |
| **अभ्यासक्रम :** | | तासिका |
| | **श्रेयांकन १.** लोकसाहित्याचे स्वरूप : व्याप्ती आणि संशोधन | |
| | १.१ लोकसाहित्य : संकल्पना व स्वरूप | ३ |
| | १.२ लोकसाहित्याची व्याप्ती | २ |
| | १.३ लोकसाहित्याच्या अभ्यासपद्धती | ५ |
| | १.४ लोकसाहित्याचा इतर ज्ञानशाखांशी असलेला संशोधनात्मक संबंध | ५ |
| | **श्रेयांकन २.** लोकसाहित्य व लोकसंस्कृती | |
| | २.१ लोकसंस्कृतीची मूलतत्त्वे | ४ |
| | २.२ लोकसंस्कृती व लोकदैवते | ३ |
| | २.३ लोकसंस्कृती व लोकमानस | ४ |
| | २.४ लोकसंस्कृती व समाजजीवन | ४ |
| | **श्रेयांकन ३.** लोकसाहित्य:आस्वाद व समीक्षा | |
| | ३.१ लोकसाहित्याची निर्मिती व प्रयोजने | ३ |
| | ३.२ लोकसाहित्याचे प्रकार : लोकगीते, लोककथा, लोकनाट्य, म्हणी व वाक्प्रचार | ५ |
| | ३.३ लोकसाहित्याची भाषा | २ |
| | ३. ४ लोकसाहित्याच्या अभ्यासाचे महत्त्व : ऐतिहासिक, सामाजिक, भाषावैज्ञानिक, सांस्कृतिक, वाङ्मयीन, भौगोलिक, आदिबंधात्मक | ५ |
| | **श्रेयांकन ४.** लोकसाहित्य व संशोधन | |
| | ४.१ लोकसाहित्याचे संशोधक | ३ |
| | ४.२ लोकसाहित्याची संशोधन क्षेत्रे | ४ |
| | ४.३ लोकसाहित्य संशोधनाची उद्दिष्टे | ३ |
| | ४.४ लोकसाहित्य संशोधनाच्या दिशा व त्यापुढील आव्हाने | ५ |
| | एकूण | ६० |
| **अध्यापन पद्धती :** | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईंट सादरीकरण, इत्यादी | |
| **शैक्षणिक फलित :** | १. विद्यार्थ्यांना 'लोकसाहित्य' या संशोधन विषयाचे महत्त्व कळेल.<br>२. लोकसाहित्याच्या संशोधनामागील उद्दिष्टे स्पष्ट होतील. | |

| | | |
|---|---|---|
| | ३. लोकसाहित्याच्या संशोधनामागील व्याप्ती स्पष्ट होईल.<br>४. लोकसाहित्याच्या संशोधनाच्या नव्या दिशांचे आकलन होईल. | |
| **संदर्भ ग्रंथ:** | १. केरकर, राजेंद्र पांडुरंग, गोमंतकाची सांस्कृतिक संचिते, गोवा सरकार, कला व संस्कृती संचालनालय, २००५.<br>२. खेडेकर, विनायक विष्णू, गोवा कुणबी : पर्यावरण संस्कृतीचे जनक, रक्षक, संपर्क माध्यम, फेब्रु. २००४.<br>३. खेडेकर, विनायक विष्णू , लोकसरिता : गोमंतकीय जनजीवनाचा समग्र अभ्यास, कला अकादमी गोवा, मार्च १९९३.<br>४. खेडेकर, विनायक विष्णू, गोवा संस्कृतिबंध, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे, २०१२.<br>५. खेडेकर, विनायक विष्णू, गोवा लग्नाख्यान, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे, २८ सप्टेंबर २०१२.<br>६. गंधारे, द. के, रोंगटे, तुकाराम, मिसाळ निवृत्ती, ‘लोकसाहित्य : कला आणि संस्कृती’, शब्दालय प्रकाशन श्रीरामपूर, मे २०१३.<br>७. देखणे, रामचंद्र, महाराष्ट्राचा लोकदेव खंडोबा, पद्मगंधा प्रकाशन, १९९२.<br>८. देखणे, रामचंद्र, महाराष्ट्राची सांस्कृतिक लोककला, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे.<br>९. देवरे, रमेश, लोकसाहित्य दर्शन, (संपादन), कर्मवीर प्रकाशन पुणे, २००९.<br>१०. देसाई, बापूराव, लोकसाहित्यशास्त्र : संस्कृतीदर्शन, मधुराज पब्लिकेशन्स, २००२.<br>११. ढेरे, रा. चिं., लोकसंस्कृतीचे उपासक, पद्मगंधा प्रकाशन, जानेवरी १९९६.<br>१२. ढेरे, रा. चिं., संतसाहित्य आणि लोकसाहित्य, लोककल्याण, पुणे, १९७८.<br>१३. पाटील, मोहन, लोकसाहित्य संकल्पना आणि स्वरूप, मानसन्मान प्रकाशन, १९९७.<br>१४. बाबर, सरोजिनी, लोकसाहित्य शब्दकोश, महाराष्ट्र लोकसाहित्य समिती, १९७३.<br>१५. भवाळकर, तारा, लोकसाहित्याच्या अभ्यासदिशा, स्नेहवर्धन प्रकाशन, पुणे, २००९.<br>१६. भागवत, दुर्गा, लोकसाहित्याची रुपरेखा, मुंबई मराठी ग्रंथालय, १९५६.<br>१७. भागवत, दुर्गा, धर्म आणि लोकसाहित्य, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, १९७५.<br>१८. भोसले, द. ता., लोकसंस्कृती : स्वरूप आणि विशेष, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे, २७ मे २००४.<br>१९. मांडे, प्रभाकर, लोकसाहित्याचे अंत: प्रवाह, पद्मगंधा प्रकाशन, जानेवरी १९९६.<br>२०. मांडे, प्रभाकर, लोकसाहित्याचे स्वरुप, परिमल प्रकाशन, औरंगाबाद, १९७८.<br>२१. मोरजे, गंगाधर, लोकसाहित्य : एक स्वतंत्र अभ्यासक्षेत्र, दस्ताने रामचंद्र आणि कंपनी, पुणे, १९८५.<br>२२.वाकोडे, मधुकर, मौखिकता आणि लोकसाहित्य, साहित्य अकादमी, नवी दिल्ली, २००१.<br>२३. व्यवहारे, शरद, लोकसंस्कृतीचे अंत: प्रवाह, प्रतिमा प्रकाशन, जून १९९९.<br>२४. व्यवहारे, शरद, ‘लोकरंजनाची पारंपारिक माध्यमे’, स्वरूप प्रकाशन, १९९८.<br>२५.सहस्रबुद्धे, अनिल, ‘लोकसाहित्य : संशोधन पध्दती, दस्ताने रा, १९९७.<br>२६. सूर्यवंशी, रमेश, ‘लोकसाहित्य आणि अभ्यास विषय, अभ्यासिका - औरंगाबाद, १ जून २०१०.<br>२७.शिंदे, विश्वनाथ, ‘लोकसाहित्यमीमांसा - भाग पहिला, स्नेहवर्धन, पुणे, १९९८.<br>२८.शिंदे, विश्वनाथ, ‘लोकसाहित्यमीमांसा भाग दुसरा, स्नेहवर्धन, पुणे, २००६. | |

**Title of the course**: **तौलनिक साहित्याभ्यास**

**Comparative Study of Literature**

**Course code**: MAR- 602

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

**Effective from AY** 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| **पूर्वापेक्षित :** | विद्यार्थ्यांना मराठी व्यतिरिक्त किमान अन्य एका भाषेचे ज्ञान असणे आवश्यक. | |
| **उद्दिष्टे :** | साहित्याच्या तुलनात्मक अभ्यासाची पद्धत समजावून घेऊन विद्यार्थ्यांमध्ये तुलनात्मक अभ्यासपद्धतीचा दृष्टिकोन विकसित करणे. | |
| **अभ्यासक्रम :** | | तासिका |
| | श्रेयांकन १ : तौलनिक साहित्याचे सिद्धान्तन | |
| | १.१ तौलनिक साहित्याभ्यास : संकल्पना, स्वरूप, व्याख्या | ४ |
| | १.२ तौलनिक साहित्याभ्यासाची परंपरा | ४ |
| | १.३ तौलनिक अभ्यास आणि साहित्य यांचा सहसंबंध | ४ |
| | १.४ वाङ्मयप्रकाराभ्यास आणि तौलनिक साहित्याभ्यास | ३ |
| | श्रेयांकन २ : तौलनिक साहित्याची अभ्यासक्षेत्रे | |
| | २.१ साहित्यिक-सांस्कृतिक आदान प्रदान आणि मध्यस्थी | २ |
| | २.२ राष्ट्रीय साहित्य, विश्वसाहित्य | ३ |
| | २.३ भाषांतराचे प्रकार आणि तौलनिक साहित्याभ्यास | २ |
| | २.४ प्रभाव आणि प्रभव | २ |
| | २.५ मराठी साहित्यावरील अन्य भाषांतील साहित्याचा प्रभाव | ३ |
| | २.६ अन्य भाषांतील साहित्यकृतींची मराठी भाषांतरे | ३ |
| | श्रेयांकन ३ : साहित्यकृतींचा तुलनात्मक अभ्यास (नाटक) | |
| | ३.१ घाशीराम कोतवाल – विजय तेंडुलकर (मराठी) | ४ |
| | ३.२ शबै शबै भोवजन समाज – पुंडलिक नायक (कोकणी) | ४ |
| | ३.३ उपरोल्लेखित कलाकृतींचा तुलनाभ्यास | ७ |
| | श्रेयांकन ४: साहित्यकृतींचा तुलनात्मक अभ्यास (कादंबरी) | |
| | ४.१ आवरण – एस. एल. भैरप्पा - अनुवाद – उमा कुलकर्णी (मराठी) | ४ |
| | ४.२ तांडव – महाबळेश्वर सैल (मराठी) | ४ |
| | ४.३ उपरोल्लेखित कलाकृतींचा तुलनाभ्यास | ७ |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती: | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण इत्यादी. | |
| शैक्षणिक फलित | १. विद्यार्थ्यांमध्ये तुलनात्मक दृष्टिकोन विकसित होईल.<br>२.विद्यार्थी साहित्याचा तुलनात्मक अभ्यास करू शकतील. | |
| संदर्भ : | १. बापट, वसंत, तौलनिक साहित्याभ्यास मूलतत्त्वे आणि दिशा, मौज प्रकाशन, मुंबई.<br>२.मिरजकर, निशिकांत, तौलनिक साहित्य, प्रतिमा प्रकाशन, पुणे.<br>३. जहागिरदार, चंद्रशेखर, तौलनिक साहित्याभ्यास, सौरभ प्रकाशन, कोल्हापूर. | |

| | |
|---|---|
| | ४. अडसूळ, श्रीकृष्ण,(संपादक) आनंदपर्व ( तौलनिक साहित्य आणि संस्कृती समीक्षा), आनंद ग्रंथसागर प्रकाशन, कोल्हापूर.<br>५. पाटील, अनंद, तौलनिक साहित्यः नवे सिद्धांत आणि उपयोजन, साकेत प्रकाशन, औरंगाबाद.<br>६. मालशे, मिलिंद, जोशी, अशोक, (संपा.) आधुनिक समीक्षा सिद्धांत, मौज प्रकाशन, मुंबई.<br>७. . पाटील, अनंद, मराठी नाटकावरील इंग्रजी प्रभाव, लोकवाङ्मय गृह, मुंबई.<br>८. चंद्रशेखर, (संपा.) (हिंदी मराठी नाटक आणि रंगभूमी- निशिकांत ठकार) तौलनिक साहित्याभ्यास- तत्त्वे आणि दिशा. सौरभ प्रकाशन, कोल्हापूर.<br>९. जहागिरदार, चंद्रशेखर, तौलनिक साहित्याभ्यास तत्त्वे आणि दिशा. कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन, पुणे.<br>१०. मिरजकर, निशिकांत, तौलनिक साहित्याभ्यास आणि मराठी साहित्य, अथर्व पब्लिकेशन्स, जळगांव.<br>११. मेश्राम (पाटील), निता, तौलनिक साहित्याभ्यास संकल्पना व विचार, अंशुल पब्लिकेशन्स, नागपूर. |

**Title of the course: स्त्रीवादी मराठी साहित्य : स्वरूप आणि संशोधन**

**Feminist Literature in Marathi : Form and Research**

**Course code**: MAR - 603

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

**Effective from AY**: 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| **पूर्वापेक्षित :** | विद्यार्थ्यांना स्त्रीवाद आणि स्त्रीवादी साहित्याविषयीची माहिती असणे आवश्यक आहे. | |
| **उद्दिष्टे :** | १. स्त्रीवादी साहित्याचा परिचय करून देणे.<br>२. स्त्रीवादी समीक्षेचा अभ्यास करणे. | |
| **अभ्यासक्रम :** | | तासिका |
| | **श्रेयांकन १.** स्त्रीवाद : संकल्पना व स्वरूप | |
| | १.१ स्त्रीवादाच्या विविध व्याख्या | ८ |
| | १.२ स्त्रीवादी साहित्यनिर्मितीमागील प्रेरणा | ७ |
| | **श्रेयांकन २.** स्त्रीवादाची वाटचाल व स्त्रीवादी साहित्य | |
| | २.१ जागतिक व भारतीय स्त्रीवादाचा इतिहास | ८ |
| | २.२ मराठी साहित्यातील स्त्रीवादाचा इतिहास | ७ |
| | **श्रेयांकन ३.** मराठीतील स्त्रीवादी साहित्य आणि समीक्षा | |
| | ३.१ स्त्रीवादी समीक्षा | ८ |
| | ३.२ स्त्रीवाद : विविध विचारप्रवाह | ७ |
| | **श्रेयांकन ४.** स्त्रीवादी मराठी साहित्यकृती | |
| | ४.१ हंस अकेला - मेघना पेठे (कथा) | ७ |
| | ४.२ स्रीसूक्त- अश्विनी धोंगडे (कविता) | ८ |
| | एकूण | ६० |
| **अध्यापन पद्धती :** | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईंट सादरीकरण, इत्यादी | |
| **शैक्षणिक फलित :** | १. विद्यार्थ्यांना स्त्रीवादातील विविध तत्त्वांचे आकलन होईल.<br>२. स्त्रीवादातील विविध संकल्पना व दृष्टिकोन यांचा अभ्यास होईल. | |
| **संदर्भ ग्रंथ:** | १. पाटील, गंगाधर, समीक्षा मीमांसा, मौज प्रकाशन गृह, मुंबई, २०११.<br>२. वरखेडे, मंगला, स्त्रियांची नवकथा: वाटा आणि वळणे, कैलास राणा प्रकाशन, नासिक, १९९६.<br>३. वरखेडे, मंगला, स्त्रीवादी समीक्षा: संकल्पना आणि उपयोजन, का. सं. वाणी मराठी प्रगत अध्ययन संस्था, धुळे, १९९८.<br>४. बोव्हूवा सिमॉन द, द सेकेंड सेक्स, अनु. करुणा गोखले, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे, २०१२.<br>५. धोंगडे, अश्विनी, स्त्रीवादी समीक्षा संकल्पना आणि उपयोजन, | |

| | |
|---|---|
| | ६. महाजन, वंदना, स्त्रीवाद आणि मराठी साहित्य, विजय प्रकाशन, नागपूर, २०१३.<br>७. फडके, भालचंद्र, मराठी लेखिका चिंता आणि चिंतन, श्रीविद्या प्रकाशन, पुणे, १९८०.<br>८. शेवडे, इंदुमती, स्त्रीमुक्तीच्या महाराष्ट्रातील पाऊलखुणा, मुंबई, १९८९.<br>९. खांडगे, मंदा (संपा.), स्त्रीसाहित्याचा मागोवा, खंड १, २ पुणे.<br>१०.Singh, Sushila,'Feminism: Theory. Criticism, Analysis',Delhi, Pencraft International,First ed.1997.<br>११.पाटील, आशुतोष (संपा.), 'स्त्री-लिखित साहित्य संदर्भ आणि चिकित्सा',श्रीरामपूर, शब्दालय प्रकाशन,प. आ. २०१५.<br>१२.पाटील, शोभा,'स्त्रीवादी विचार आणि समीक्षेचा मागोवा',पुणे, स्नेहवर्धन प्रकाशन,प. आ. २००७.<br>१३.जाधव, मनोहर (संपा.), समीक्षेतील नव्या संकल्पना,औरंगाबाद, स्वरूप प्रकाशन,प. आ. २००१.<br>१४.भागवत, विद्युत, स्त्रीवादी समाजिक विचार,पुणे, डायमंड पब्लिकेशन्स,प. आ. २००८.<br>१५.नाईक, शोभा, भारतीय संदर्भातून स्त्रीवाद, स्त्रीवादी समीक्षा आणि उपयोजन',मुंबई, लोकवाङ्मयगृह,प. आ. २००७.<br>१६.जोगळेकर, मृणालिनी, स्त्रीमुक्तीच्या महाराष्ट्रातील पाऊलखुणा : स्त्रीअस्मितेचा आत्मस्वर १९वे शतक (भाग ३),मुंबई, पॉप्युलर प्रकाशन,प. आ. १९९१.<br>१७.खोले, विलास, ताराबाई शिंदे लिखित स्त्री-पुरुष यथामूल संशोधित आवृत्ती, प्रतिमा प्रकाशन, पुणे, १९९९.<br>१८.महाजन, वंदना, स्त्रीवाद साहित्य आणि समीक्षा, पुणे, डायमंड प्रकाशन, पुणे.<br>१९.कर्वे,स्वाती, साद-पडसाद, 'यमुनापर्यटन' ते 'ब्र',पुणे, डायमंड प्रकाशन, पुणे.<br>२०.आठलेकर, मंगला,'महर्षी ते गौरी',राजहंस प्रकाशन,पुणे<br>२१.खडपेकर, विनया,स्त्रीस्वातंत्र्यवादींनी विसाव्या शतकातील परिवर्तन,मुंबई, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, २००५.<br>२२.खिंवसरा, मंगला, स्त्रीमुक्ती चळवळ आणि वृत्तपत्रांचा इतिहास, औरंगाबाद, स्वरूप प्रकाशन,प. आ. २००५.<br>२३.खोले, विलास, (संपा.),'गेल्या अर्धशतकातील मराठी कादंबरी',मुंबई, लोकवाङ्मय गृह,प. आ. २००२.<br>२४.ढेरे, अरूणा, स्त्रीलिखित मराठी कादंबरी (१९५० ते २०१०),पुणे, पद्मगंधा प्रकाशन,प. आ. २०१३.<br>२५.राजापुरे-तापस,पुष्पलता, एकेक पान गळावया आणि नंतर,पुणे, पद्मगंधा प्रकाशन,प. आ. २००७.<br>२६.राजापुरे-तापस, पुष्पलता, (संपा),'१९८०नंतरचे स्त्री-निर्मित कथनपर साहित्य',मुंबई, मुंबई विद्यापीठ आणि श्रीरामपूर, शब्दालय प्रकाशन, प. |

| | |
|---|---|
| | आ. २०१०.<br>२७.गणोरकर, प्रभा, आणि इतर, (संपा.),‘वाङ्मयीन संज्ञा संकल्पना कोश’,मुंबई, जी. आर. भटकळ फाउंडेशन,प. आ. २००१.<br>२८.खांडगे, मंदा, व इतर, (संपा.), स्त्री साहित्यचा मागोवा,खंड – १,२, साहित्यप्रेमी भगिनी मंडळ, पुणे, २००२. |

**Title of the course:** महानगरीय मराठी साहित्य: स्वरूप आणि संशोधन

**Metropolitan Literature in Marathi : Form and Research**

**Course code**: MAR - 604

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

**Effective from AY:** 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| पूर्वापेक्षित: | विद्यार्थ्यांना महानगरीय जीवन व त्यासंबंधीचे साहित्य या विषयीची जाणीव असणे आवश्यक आहे.<br>बदलत्या सांस्कृतिक आणि सामाजिक जीवनाविषयीची जाणीव असणे. | |
| उद्दिष्टे : | १. स्वातंत्र्यपूर्व आणि स्वातंत्र्योत्तर काळातील सामाजिक, सांस्कृतिक, राजकीय व आर्थिक बदलांमुळे निर्माण झालेल्या महानगरीय साहित्याचा अभ्यास करणे.<br>२. भारतीय समाजमानसावर उमटलेल्या दोन महायुद्धांच्या पडसादांचे मराठी साहित्यावरील परिणाम समजून घेणे.<br>३. महानगर ही संकल्पना समजून घेत, शहरीकरणाची प्रक्रिया समजून घेणे.<br>४. मराठी साहित्यामधून दिसून येणाऱ्या महानगरीय जाणिवांचा परामर्श घेणे.<br>५. महानगरीय साहित्यात आशयाबरोबरच अभिव्यक्तीत झालेल्या बदलांची चिकित्सा करणे. | |
| अभ्यासक्रम : | | तासिका |
| | श्रेयांकन १: महानगर – स्वरूप आणि संकल्पना | |
| | १.१ महानगर :तात्त्विक विचार | ५ |
| | १.२ ग्राम, नगर व महानगर या संकल्पना | ४ |
| | १.३ शहरीकरण, महानगरीकरण प्रक्रिया | ६ |
| | श्रेयांकन २: महानगरीय समाजवास्तव आणि साहित्य | |
| | २.१ महानगरीय जाणिवा | ४ |
| | २.२ महानगरीय संस्कृती व समाजवास्तव | ५ |
| | २.३ महानगरीय मराठी साहित्याची वाटचाल | ६ |
| | श्रेयांकन ३: कथात्म साहित्य | |
| | ३.१ वासुनाका - भाऊ पाध्ये | ८ |
| | ३.२ मोराची बायको - किरण येले | ७ |
| | श्रेयांकन ४: कविता आणि नाटक | |
| | ४.१ ऋतू शहरातले - अरुण म्हात्रे | ८ |
| | ४.२ काय डेंजर वारा सुटलाय – जयंत पवार | ७ |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण इत्यादी | |
| शैक्षणिक फलित: | महानगरीय जीवन व महानगरीय साहित्य यांच्या सहसंबंधांचा विद्यार्थ्यांना परिचय होईल.<br>बदलत्या महानगरीय जीवनाचा वेध विद्यार्थी घेऊ शकतील. | |
| संदर्भ ग्रंथ : | १. खोले, विलास, (संपा) गेल्या अर्धशतकातील मराठी कादंबरी, लोकवाङ्मयगृह, मुंबई. | |

| | |
|---|---|
| | २. आडारकर, नीरा व मेनन, मीरा : कथा मुंबईच्या गिरणगावाची, मौज प्रकाशन, मुंबई.<br>३. आजगांवकर, सुर्यकांत (संपा.) : महानगरीय वास्तव : भारतीय कादंबऱ्यांसंदर्भात, ललित पब्लिकेशन, मुंबई.<br>४. गायकवाड, डॉ. शरद, शिंदे, प्रा. सुनील (संपा.) : जागतिकीकरण आणि मराठी साहित्य, स्नेहवर्धन प्रकाशन, पुणे.<br>५. कोत्तापल्ले, नागनाथ (संपा.) : साहित्य आणि समाज, महानगरीय जाणिवा आणि मराठी साहित्य (लेख) : सप्रे, अविनाश, प्रतिमा प्रकाशन, पुणे.<br>६. संपा. शहा, मृणालिनी, टिळक, विद्यागौरी : आधुनिक मराठी साहित्य आणि सामाजिकता, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे.<br>७. गांगुर्डे, आनंदा, महानगरीय कादंबरीतील समाजदर्शन, यशोदीप पब्लिकेशन, पुणे.<br>८. गवस, राजन, भाऊ पाध्ये यांची कथा, दर्या प्रकाशन, पुणे<br>९. गवस, राजन, भारतीय साहित्याचे निर्माते : भाऊ पाध्ये, साहित्य अकादमी, नवी दिल्ली.<br>१०. गवस, राजन, भाऊ पाध्ये यांची कादंबरी, शब्दालय प्रकाशन, श्रीरामपूर.<br>११. चित्रे, दिलीप पुरुषोत्तम, (संपा.) भाऊ पाध्ये यांची श्रेष्ठ कथा, लोकवाङ्मय गृह, मुंबई.<br>१२. शिरवाडकर, वसंत, (संपा.) वासुनाका/सांगोपांग, डिंपल प्रकाशन, वसई.<br>१३. जाधव, रा. ग., निवडक समीक्षा, मराठी कवितेतील महानगरीय संवेदना (लेख), पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे.<br>१४. जाधव, रा. ग., मराठी वाङ्मयाचा इतिहास, खंड सातवा : १९५० ते २०००, भाग तिसरा, मराठी साहित्य परिषद, पुणे.<br>१५. जाधव, रा. ग., मराठी वाङ्मयाचा इतिहास, खंड सातवा: १९५० ते २०००, भाग दुसरा, मराठी साहित्य परिषद, पुणे. |

**Title of the course**: ग्रामीण मराठी साहित्य: स्वरूप आणि संशोधन

**Rural Literature in Marathi : Form and Research**

**Course code**: MAR- 605

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

**Effective from AY:** 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| पूर्वापेक्षित: | विद्यार्थ्यांना ग्रामीणता ही संकल्पना आणि मराठीतील ग्रामीण साहित्य याबद्दलची प्राथमिक जाण असणे आवश्यक. | |
| उद्दिष्टे : | १. ग्रामीण साहित्याच्या वेगळेपणाची जाणीव विद्यार्थ्यांना करून देणे.<br>२. ग्रामीण साहित्याच्या निर्मितीमागच्या प्रेरणा विद्यार्थ्यांच्या लक्षात आणून देऊन एकूण साहित्य व्यवहारातील ग्रामीण साहित्याचे स्थान निश्चित करणे. | |
| अभ्यासक्रम : | | तासिका |
| | श्रेयांकन १: ग्रामीण साहित्य: सैद्धांतिक मांडणी | |
| | १.१ ग्रामीण साहित्य प्रेरणा आणि स्वरूप | ६ |
| | १.२ मराठी ग्रामीण साहित्याची वाटचाल | ५ |
| | १.३ मराठीतील ग्रामीण साहित्याची चळवळ | २ |
| | १.४ ग्रामीण संस्कृती आणि ग्रामीण साहित्य | २ |
| | श्रेयांकन २ : ग्रामिण साहित्याचा विविधांगी अभ्यास | |
| | २.१ ग्रामीण साहित्यातील सामाजिकता | ४ |
| | २.२ ग्रामीण साहित्य आणि प्रादेशिक साहित्य यांतील साम्यभेद | ४ |
| | २.३ ग्रामीण साहित्य आणि दलित साहित्य यांतील साम्यभेद | ४ |
| | २.४ ग्रामीण साहित्याची भाषिक वैशिष्ट्ये | ३ |
| | श्रेयांकन ३: ग्रामिण कविता आणि कथा | |
| | ३.१ सिझर कर म्हणतेय मातीः कल्पना दुधाळ | ८ |
| | ३.२ काळीज विकल्याची गोष्टः आप्पासाहेब खोत. | ७ |
| | श्रेयांकन ४: ग्रामिण कादंबरी आणि शब्दचित्रे | |
| | ४.१ गावठाणः कृष्णात खोत | ८ |
| | ४.२ माणदेशी माणसेः व्यंकटेश माडगुळकर | ७ |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण इत्यादी | |
| शैक्षणिक फलित : | १. महानगरीय जीवन व महानगरीय साहित्य यांच्या सहसंबंधांचा विद्यार्थ्यांना परिचय होईल.<br>२. बदलत्या महानगरीय जीवनाचा वेध विद्यार्थी घेऊ शकतील. | |
| संदर्भ ग्रंथ : | १. यादव, आनंद, ग्रामीण साहित्यः स्वरूप आणि समस्या, मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे.<br>२. कोत्तापल्ले, नागनाथ, ग्रामीण साहित्य स्वरूप आणि शोध, स्वरूप प्रकाशन, औरंगाबाद. | |

| | |
|---|---|
| | ३. भोसले, द. ता., ग्रामीण साहित्यः एक चिंतन, मनोविकास प्रकाशन, पुणे<br>४. नंदपुरे, ईश्वर, संपा. साहित्य : ग्रामीण आणि दलित, विजय प्रकाशन, नागपूर.<br>५. मुलाटे, वासुदेव, ग्रामीण साहित्य चिंतन आणि चर्चा, स्वरूप प्रकाशन, औरंगाबाद<br>६. मंचरकर, रं. बा., (संपा.)सामाजिक परिवर्तन आणि मराठी साहित्य, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे<br>७. मुलाटे, वासुदेव, ग्रामीण साहित्य स्वरूप आणि दिशा, स्वरूप प्रकाशन, औरंगाबाद<br>८. पगारे, म. सु., (संपा.) ग्रामीण दलित साहित्याचा अनुबंध, दिलीपराज प्रकाशन, पुणे<br>९. पानतावणे, गंगाधर (संपा.) दलित - ग्रामीण साहित्यः रूढी परंपरा विधी कोश, राज्य मराठी विकास संस्था, मुंबई.<br>१०. यादव, आनंद, १९६० नंतरची सामाजिक स्थिती आणि साहित्यातील नवे प्रवाह, मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे.<br>११. मुलाटे, वासुदेव, ग्रामीण कथाः स्वरूप आणि विकास, स्वरूप प्रकाशन, औरंगाबाद.<br>१२. यादव ,आनंद, मराठी साहित्य समाज आणि संस्कृती, मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे.<br>१३. कोत्तापल्ले, नागनाथ, साहित्याचा अन्वयार्थ, स्वरूप प्रकाशन, औरंगाबाद. |

**<u>Title of the course: मराठीतील नियतकालिके</u>**

**<u>Periodicals in Marathi</u>**

**Course code**: MAR - 606

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

**Effective from AY**: 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| पूर्वापेक्षित : | मराठी वृत्तपत्रे व नियतकालिके यांची प्राथमिक जाण आवश्यक. | |
| उद्दिष्टे : | १. नियतकालिकांचे सामाजिक व वाङ्मयीन कार्य समजावून देणे.<br>२. नियतकालिकांचे महत्त्व विद्यार्थ्यांपर्यंत पोहोचविणे. | |
| | | तासिका |
| अभ्यासक्रम : | श्रेयांकन १: नियतकालिके : प्रारंभिक काळ | |
| | १.१ नियतकालिकांचे स्वरूप व भारतात नियतकालिकांचे आगमन. | ४ |
| | १.२ अव्वल इंग्रजी कालखंडातील नियतकालिकांच्या निर्मितीची पार्श्वभूमी. | ६ |
| | १.३ निबंधमाला व विविधज्ञानविस्तार या नियतकालिकांचे वाङ्मयीन योगदान. | ५ |
| | श्रेयांकन २: एकोणिसाव्या आणि विसाव्या शतकातील नियतकालिकांचे स्वरूप. | |
| | २.१ १८८० ते १९२० या कालखंडातील नियतकालिके. | ८ |
| | २.२ १९२० ते १९४७ या कालखंडातील नियतकालिके. | ७ |
| | श्रेयांकन ३: नियतकालिके व त्यांचे वाङ्मयीन कार्य | |
| | ३.१ करमणूक | २ |
| | ३.२ मनोरंजन | ३ |
| | ३.३ रत्नाकर | २ |
| | ३.४ नवभारत | २ |
| | ३.५ सह्याद्री | २ |
| | ३.६ सत्यकथा | २ |
| | ३.७ अभिरुची | २ |
| | श्रेयांकन ४: मुक्तीपूर्व गोमंतकातील नियतकालिकांचे स्वरूप व कार्य | |
| | ४.१ प्रभात | ४ |
| | ४.२ स्वयंसेवक | ४ |
| | ४.३ भारत | ३ |
| | ४.४ भारतमित्र व अन्य | ४ |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण इत्यादी. | |
| शैक्षणिक फलित : | मराठीतील नियतकालिकांचे सांस्कृतिक, सामाजिक व राजकीय कार्य विद्यार्थ्यांच्या ध्यानात येईल व वाङ्मयीन विकासातील नियतकालिकांचे योगदान स्पष्ट होईल. | |
| संदर्भ ग्रंथ : | १. प्रभुदेसाई, वि. बा. व घवी, रवींद्र, (संपा.) गोमंतकीय मराठी वाङ्मयाचा इतिहास (खंड १), गोमंतक मराठी अकादमी, गोवा. | |

| | |
|---|---|
| | २. कुळकर्णी, वा. ल. मराठी ज्ञानप्रसारक : इतिहास आणि वाङ्मविचार, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई,१९६५.<br>३. कुलकर्णी, व. दि. मराठी नियतकालिकांचा वाङ्मयीन अभ्यास (खंड १), श्रीविद्या प्रकाशन पुणे, १९८७.<br>४. देशमुख, उषा. मा. मराठी नियतकालिकांचा वाङ्मयीन अभ्यास (खंड २), मुंबई विद्यापीठ, मुंबई, १९९५.<br>५. देशमुख, उषा. मा. मराठी नियतकालिकांचा वाङ्मयीन अभ्यास (खंड ३), मुंबई विद्यापीठ, मुंबई, १९९५.<br>६. दाते, शंकर गणेश व काळे, दि. वि. (संपा.) मराठी नियतकालिकांची सूची (खंड १) १८०० - १९५०, मुंबई मराठी ग्रंथसंग्रहालय, १९७५.<br>७. मराठी नियतकालिके व त्यांचे वाङ्मयीन कार्य, आलोचना, जून,१९७४.<br>८. कुलकर्णी, गो. म. मराठी साहित्यातील स्पंदने, सुवर्ण प्रकाशन, पुणे, १९८५.<br>९. कुळकर्णी, वा. ल., विविधज्ञानविस्तार – इतिहास आणि वाङ्मयविचार, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, १९७६.<br>१०. जोशी, वि. के. व लेले, रा. कृ. वृत्तपत्रांचा इतिहास, कॉन्टिनेंन्टल प्रकाशन, पुणे. |

**Title of the course:** भारतीय साहित्याचा अभ्यास
**Study of Indian Literature**

**Course code**: MAR- 607
**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60
**Effective from AY** 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| पूर्वापेक्षित - | विद्यार्थ्यांना भारतीय साहित्याच्या समृद्ध परंपरेची जाणीव असणे आवश्यक. | |
| उद्दिष्टे : | १. भारतीय साहित्याची परंपरा विद्यार्थ्यांच्या लक्षात आणून देणे.<br>२. अन्य भारतीय भाषांमधील साहित्याचा विद्यार्थ्यांना परिचय करून देणे.<br>३. तुलनात्मक अभ्यास करण्यास प्रोत्साहन देणे. | |
| अभ्यासक्रम : | | तासिका |
| | श्रेयांकन १: भारतीय साहित्य | |
| | १.१ भारतीय साहित्य संकल्पना व स्वरूप | ८ |
| | १.२ भारत, भारतीय, भारतीयत्व, भारतीय संस्कृती आणि भारतीय साहित्य यांचा अनुबंध | ७ |
| | श्रेयांकन २: भारतीय साहित्य अभ्यासातील समस्या | |
| | २.१ ऐतिहासिक व भौगोलिक समस्या | ८ |
| | २.२ भाषिक व लिपी विषयक समस्या | ७ |
| | श्रेयांकन ३ : कादंबरी व नाटक | |
| | ३.१ आनंदमठ – बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय (अनुवाद : श्रीपाद जोशी) | ७ |
| | ३.२ अंधायुग – धर्मवीर भारती (अनुवाद : शशिकांत कुलकर्णी) | ८ |
| | श्रेयांकन ४ : कविता व कथा | |
| | ४.१ बोल माधवी – चंद्रप्रकाश देवल (अनुवाद : आसावरी काकडे) | ८ |
| | ४.२ प्रेमचंद – निवडक कथा – मुंशी प्रेमचंद (अनुवाद : श्रीधर शनवारे) | ७ |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्यान, गटचर्चा, पावर पॉईन्ट सादरीकरण. | |
| शैक्षणिक फलित: | भारतीय साहित्याची संकल्पना व स्वरूप विद्यार्थ्यांना स्पष्ट होईल. | |
| संदर्भ ग्रंथ: | १. मुलचंद, गौतम, भारतीय साहित्य, राजकमल प्रकाशन समुह, दिल्ली.<br>२. मूर्ती, सुधा, पुण्यभूमी भारत, अनु. सोहनी, लीना, मेहता पब्लिशिंग हऊस, पुणे.<br>३. मांद्रेकर, वृषाली, भारतीय साहित्यकी मानवतावादी धाराऐ, विद्या प्रकाशन, कानपूर.<br>४. पाण्डेय, लक्ष्मीकांत, भारतीय साहित्य, आशिष प्रकाशन, कानपूर.<br>५. मडगांवकर, विनय (संपा.) तिसऱ्या सहस्रकारंभी भारतीय नाट्य आणि नाटककार, संत सोहिरोबानाथ अध्यासन, अतिथी प्राध्यापक, संशोधन | |

| | |
|---|---|
| | संचालनालय, गोवा विद्यापीठ, गोवा.<br>६. मुगळी, रं, श्री, अनु. कायकिणी, गौरीश, कन्नड साहित्याचा इतिहास, साहित्य अकादमी, मुंबई.<br>७. घोंगे, पराग, नाट्यदर्शन, विजया प्रकाशन, नागपूर.<br>८. पुंडे, द. दि., (संपा) भारतीय साहित्याची संकल्पना, प्रतिमा प्रकाशन, पुणे.<br>९. देशपांडे, वि. भा., गाजलेल्या रंगभूमिका, रोहन प्रकाशन, पुणे.<br>१०. बापट, वसंत, तौलनिक साहित्याभ्यास, मौज प्रकाशन, मुंबई.<br>११. लवटे, सुनीलकुमार, भारतीय साहित्यिक, मेहता पब्लिशिंग हऊस, पुणे. |

**Semester III**

**Title of the course: मराठीतील विज्ञानसाहित्य**

**Science Fiction in Marathi**

**Course code**: MAR - 621

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

**Effective from AY:** 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| पूर्वापेक्षित : | मराठीतील विविध वाङ्मयीन प्रवाहांची माहिती असणे आवश्यक. | |
| उद्दिष्टे : | १. विज्ञानसाहित्य ही संकल्पना समजावणे.<br>२. विज्ञान आणि मानवी जीवन यांचा सहसंबंध समजून घेण्याची तसेच मानवी जीवनावर भविष्यात होऊ शकणाऱ्या विज्ञानाच्या संभाव्य प्रभावांची कल्पना देऊन त्याद्वारे स्वतंत्र विज्ञानसाहित्य निर्माण करण्याची क्षमता विकसित करणे. | |
| अभ्यासक्रम : | | तासिका |
| | श्रेयांकन १ : विज्ञानसाहित्य : स्वरूप आणि इतिहास<br>१.१ विज्ञानसाहित्याची संकल्पना<br>१.२ विज्ञानसाहित्य अभ्यासाची आवश्यकता<br>१.३ विज्ञानसाहित्याची मराठीतील परंपरा<br>१.४ विज्ञानसाहित्याची समीक्षा<br>१.५ विज्ञानसाहित्य अभ्यासातील अडचणी<br>१.६ विज्ञानसाहित्य अभ्यासातील विविध पूरक घटक<br>१.७ विज्ञानसाहित्य आणि बदलते परिप्रेक्ष्य, नव्या संकल्पना<br><br>श्रेयांकन २ : कथा<br>२.१ मंगळदेवाची कहाणी – शरद पुराणिक<br>२.२ बीटा एकशे तेवीस – फुला बागूल<br><br>श्रेयांकन ३ : कथा आणि कादंबरी<br>३.१ अंतराळातील मृत्यू – सुबोध जावडेकर<br>३.२ धूमयान – पंडित विद्यासागर<br><br>श्रेयांकन ४ : कादंबरी<br>४.१ अघटित – बाळ फोंडके<br>४.२ आदित्य – अरुण हेबळेकर | <br>३<br>२<br>३<br>२<br>१<br>२<br>२<br><br><br>७<br>८<br><br><br>७<br>८<br><br><br>८<br>७ |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्यान, गटचर्चा, पावर पॉईन्ट सादरीकरण. | |
| शैक्षणिक फलित: | १. विज्ञानसाहित्याची संकल्पना विद्यार्थ्यांना स्पष्ट होईल.<br>२. विद्यार्थ्यांना साहित्य आणि विज्ञान यांचे सहसंबंध समजतील. | |
| संदर्भ : | १. शिंदे, रवींद्र, विज्ञानसाहित्य : संकल्पना आणि स्वरूप, शब्दवैभव प्रकाशन, पुणे. | |

| | |
|---|---|
| | २. लिंबाळे शरणकुमार, साठोत्तरी मराठी वाङ्मयातील प्रवाह, दिलीपराज प्रकाशन, पुणे<br>३. घाटे निरंजन, विज्ञानवाङ्मय (लेख), मराठी वाङ्मयाचा इतिहास, खंड 7, भाग<br>४. विज्ञानवाङ्मय, मराठी वाङ्मयाचा इतिहास, खंड 5, भाग 2.<br>५. पगारे, म.सु., मराठी विज्ञानसाहित्य, प्रशांत पब्लिकेशन्स, पुणे.<br>६. विज्ञान साहित्य विशेषांक, पंचधारा, मार्च 2021.<br>७. जयंत नारळीकर विशेषांक, महाराष्ट्र साहित्य पत्रिका, मार्च 2021.<br>८. मराठी विज्ञानवाङ्मय सूची, राज्य मराठी विकास संस्था, मुंबई.<br>९. कुलकर्णी, द.दि., घाटे, निरंजन, विज्ञानसाहित्य आणि संकल्पना.<br>१०. बागुल, फुला, मराठी विज्ञानसाहित्य : समीक्षा व संशोधन, अथर्व प्रकाशन, जळगाव.<br>११. घाटे, निरंजन, विज्ञान, मराठी आणि विज्ञान वाङ्मय.<br>१२. एरंडे, जयंत श्रीधर, मराठी विज्ञान साहित्याचा इतिहास, महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृती मंडळ, मुंबई.<br>१३. शिंदे, संजय, मराठी विज्ञानसाहित्य, प्रशांत प्रकाशन, पुणे.<br>१४. पवार, जयदेवी, आ. य. पवार यांच्या निसर्ग आणि विज्ञान कविता, इंव्हेंशन प्रकाशन, लातूर. |

**Title of the course:** भाषांतरविद्या

**Translation Studies**

**Course code**: MAR - 622

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

**Effective from AY:** 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| पूर्वापेक्षित : | विद्यार्थ्यांजवळ किमान दोन भाषांचे आणि त्यांच्या सांस्कृतिक पर्यावरणाची जाण असणे आवश्यक आहे. | |
| उद्दिष्टे : | भाषांतरविषयक वेगवेगळी कौशल्ये आत्मसात करून तसेच भाषांतराचे विविध प्रकार समजावून घेऊन प्रत्यक्ष भाषांतर करण्याची क्षमता विकसित करणे. | |
| अभ्यासक्रम : | श्रेयांकन १: भाषांतराचे स्वरूप आणि भाषांतरप्रक्रिया<br>१.१ भाषांतराची आवश्यकता आणि महत्त्व<br>१.२ भाषांतर : शास्त्र की कला<br>१.३ भाषांतर संहितेचे स्वरूप, मूळ संहितेचे पुनर्घटन<br>१.४ स्रोतसंहितेचे अर्थग्रहण, विश्लेषण, अर्थांतरण आणि अर्थसंप्रेषणक्षमता<br>१.५ भाषांतरप्रक्रियेतील समस्या<br>१.६ भाषांतर, अनुवाद, रूपांतर, शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद<br><br>श्रेयांकन २ : भाषांतर आणि भाषांतरकार<br>२.१ भाषांतराची विविध क्षेत्रे आणि प्रकार<br>२.२ साहित्याचे भाषांतर : कथात्म साहित्य, कविता आणि नाटक<br>२.३ साहित्येतर भाषांतर : शासकीय, कार्यालयीन, वैज्ञानिक, तांत्रिक, वैद्यकीय, कायदेविषयक, जाहिराती इ.<br>२.४ भाषांतराची साधने : कोशवाङ्मय, परिभाषाकोश, शब्दकोश, संगणक इ.<br><br>श्रेयांकन ३ : भाषांतराचे उपयोजन : साहित्याचे भाषांतर<br>(विविध साहित्यप्रकारांतील निवडक मजकुरांच्या अंशांचे प्रत्यक्ष भाषांतर करून त्याद्वारे साहित्यिक भाषांतर आणि त्याचे विविध पैलू समजावून घेणे.)<br>३.१ कथात्म साहित्य<br>३.२ कविता<br>३.३ नाटक<br><br>श्रेयांकन ४: भाषांतराचे उपयोजन : साहित्येतर भाषांतर<br>(विविध प्रकारच्या साहित्येतर निवडक मजकुरांच्या अंशांचे प्रत्यक्ष भाषांतर करून त्याद्वारे साहित्येतर भाषांतर आणि त्याचे विविध पैलू समजावून घेणे.)<br>४.१ कार्यालयीन/शासकीय, कायदेविषयक, वैद्यकीय, अहवाल<br>४.२ वर्तमानपत्रे, जाहिराती आणि वृत्तवाहिनी<br>४.३ माहितीपुस्तिका, शैक्षणिक/अभ्यासक्रम | तासिका<br>३<br>२<br>३<br>३<br>२<br>२<br><br>४<br>४<br>४<br><br>३<br><br>६<br>५<br>४<br><br>६<br>५<br>४ |

| | | |
|---|---|---|
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्यान, गटचर्चा, पावर पॉईन्ट सादरीकरण. | |
| शैक्षणिक फलित: | १. भाषांतराची आवश्यकता आणि महत्त्व विद्यार्थांच्या लक्षात येईल.<br>२. विद्यार्थ्यांमध्ये प्रत्यक्ष भाषांतर करण्याची क्षमता विकसित होईल. | |
| संदर्भ : | १. काळे, कल्याण, सोमण, अंजली, भाषांतरमीमांसा, चिन्मय प्रकाशन, पुणे.<br>२. पाठक, म.वि., ठकार, रजनी, भाषांतर : शास्त्र की कला?, वरदा प्रकाशन, पुणे.<br>३. सारंग, विलास, भाषांतर : काही प्रश्न, सत्यकथा, सप्टेंबर 1974.<br>४. बापट, वसंत, तौलनिक साहित्याभ्यास मुलतत्वे आणि दिशा, मौज प्रकाशन, पुणे.<br>५. चित्रे, दिलीप, कवितेचे भाषांतर, आलोचना, जानेवारी 1989.<br>६. कऱ्हाडे, सदा, भाषांतर, मुंबई, लोकवाङ्मयगृह, मुंबई.<br>७. चित्रे, दिलीप, कवितेचे भाषांतर, नवभारत, एप्रिल 1983.<br>८. सारंग, विलास, भाषांतराचे काही प्रश्न, सत्यकथा, ऑगस्ट 1974.<br>९. पंचधारा भाषांतर विशेषांक, डिसेंबर 2021.<br>१०. नेमाडे, भालचंद्र, साहित्याची भाषा, साकेत प्रकाशन, औरंगाबाद. | |

**Title of the course: साहित्याचा समाजशास्त्रीय अभ्यास**
**Sociological Study of Literature**

**Course code**: MAR - 623
**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60
**Effective from AY:** 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| पूर्वापेक्षित : | विद्यार्थ्यांना साहित्य आणि समाज यांच्यातील परस्परसंबंधांची जाण असणे आवश्यक. | |
| उद्दिष्टे : | १. साहित्य आणि समाज यांच्यामधील नातेसंबंध उलगडून दाखवणे.<br>२. साहित्यातील सामाजिक संदर्भ व मूल्ये यांचा अभ्यास करणे. | |
| अभ्यासक्रम : | श्रेयांकन १ : साहित्याचा समाजशास्त्रीय अभ्यास | तासिका |
| | १.१ साहित्याच्या समाजशास्त्रीय अभ्यासाचे स्वरूप आणि संकल्पना | ५ |
| | १.२ साहित्याच्या समाजशास्त्रीय अभ्यासाची आवश्यकता | ४ |
| | १.३ साहित्याच्या समाजशास्त्रीय अभ्यासाच्या विविध पद्धती | ६ |
| | श्रेयांकन २ साहित्याच्या समाजशास्त्रीय अभ्यासाचे घटक | |
| | २.१ साहित्यातील कलामूल्ये आणि जीवनमूल्ये | ३ |
| | २.२ साहित्याचा लेखकनिष्ठ विचार | ३ |
| | २.३ साहित्याचा वाचकनिष्ठ विचार | ३ |
| | २.४ दलित, ग्रामीण, स्त्रीवादी साहित्य आणि सामाजिकता | ६ |
| | श्रेयांकन ३ : कविता आणि नाटक | |
| | ३.१ कोंडवाडा – दया पवार | ८ |
| | ३.२ किरवंत – प्रेमानंद गज्वी | ७ |
| | श्रेयांकन ४ : कथा आणि कादंबरी | |
| | ४.१ राखीव सावल्यांचा खेळ- किरण गुरव | ७ |
| | ४.२ तणकट- राजन गवस | ८ |
| | एकूण | ६० |

| | |
|---|---|
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण |
| शैक्षणिक फलित: | विद्यार्थ्यांना साहित्यातील सामाजिक संदर्भांचे आकलन होईल आणि ते सामाजिक परिप्रेक्ष्यात साहित्याचे मूल्य तपासू शकतील. |
| संदर्भ ग्रंथ : | १. कोत्तापल्ले, नागनाथ, साहित्याचा अन्वयार्थ, स्वरूप प्रकाशन, औरंगाबाद.<br>२. जाधव, रा. ग., साहित्य आणि सामाजिक संदर्भ, कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन, पुणे.<br>३. यादव आनंद मराठी साहित्य समाज आणि संस्कृती, मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे.<br>४. पाटील म. सु., साहित्याचे सामाजिक व सांस्कृतिक अनुबंध, शब्दालय प्रकाशन, श्रीरामपूर.<br>५. कऱ्हाडे सदा, साहित्य आणि समाज, लोकवाङ्मय गृह, मुंबई.<br>६. सोमण, अंजली, साहित्य आणि सामाजिक संदर्भ, प्रतिमा प्रकाशन, पुणे.<br>७. थोरात, हरिश्चंद्र, मूल्यभानाची सामग्री, शब्द पब्लिकेशन मुंबई.<br>८. पाध्ये, दिगंबर, साहित्य समाज आणि संस्कृती, लोकवाङ्मय गृह, मुंबई.<br>९. पाटणकर, वसंत, साहित्यशास्त्र स्वरूप आणि समस्या पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे.<br>१०. करंदीकर, गो. वि., साहित्यमूल्यांची चिकित्सा, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे.<br>११. नेमाडे ,भालचंद्र, टीकास्वयंवर, साकेत प्रकाशन, मुंबई.<br>१२. कोत्तापल्ले, नागनाथ, (संपा.) साहित्य आणि समाज, प्रतिमा प्रकाशन पुणे.<br>१३. डहाके, वसंत, मराठी साहित्य इतिहास आणि संस्कृती, पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई.<br>१४. थोरात, हरिश्चंद्र, साहित्याचे संदर्भ, मौज प्रकाशन गृह, मुंबई. |

**<u>Title of the course : सर्जनशील लेखन</u>**

**<u>Creative Writing</u>**

**Course code**: MAR - 624

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

**Effective from AY:** 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| पूर्वापेक्षित : | विद्यार्थ्यांना सर्जनशील लेखनाची आवड असणे आवश्यक. | |
| उद्दिष्टे : | लेखनाविष्काराच्या नवनव्या शक्यता शोधण्याची आणि विकसित करण्याची गरज लक्षात घेऊन विद्यार्थ्यांचे व्यक्तिमत्त्व सर्जनशील आणि उपयोजनाच्या अंगाने विकसित करणे. | |
| अभ्यासक्रम : | | तासिका |
| | श्रेयांकन १ : लेखन क्षमतेची विकसनशीलता | |
| | १.१ सर्जनशील लेखनाचे स्वरूप | ८ |
| | १.२ सर्जनात्मक लेखनाची प्रक्रिया | ७ |
| | श्रेयांकन २ : साहित्याचे घटक | |
| | २.१ आशय, रचना व मांडणी | ८ |
| | २.२ साहित्यप्रकार व साहित्याची भाषा | ७ |
| | श्रेयांकन ३ : लेखन क्षमतेतील भावात्मकता आणि वैचारिकता | |
| | ३.१ पद्य रचनाः कविता, गीत, गझल | ७ |
| | ३.२ गद्य रचना : कथा, कादंबरी, नाटक, ललित निबंध, चरित्र, आत्मचरित्र आणि प्रवासवर्णन | ८ |
| | श्रेयांकन ४ : प्रत्यक्ष सर्जनशील लेखन (खालील प्रकारांत सर्जनात्मक लेखन करणे.) | १५ |
| | ४.१ साहित्यप्रकार – कविता, कथा, ललित निबंध, एकांकिका | |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण इत्यादी. | |
| शैक्षणिक फलिते : | विद्यार्थी नवनिर्मितीचा अनुभव घेतील.<br>विद्यार्थ्यांच्या सर्जनशील लेखनाला चालना मिळेल. | |
| संदर्भ ग्रंथ : | १. फडके, ना .सी., प्रतिभा साधन, व्हीनस प्रकाशन, पुणे. | |

| | |
|---|---|
| | २. पाटील, आनंद, सृजनात्मक लेखन, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे.<br>३. जोशी चंद्रहास, मराठी लेखन दर्शन, मेहता पब्लिकेशन हाऊस, पुणे.<br>४. कुलकर्णी, कृ. पा., मराठी भाषा उद्‌गम आणि विकास, मेहता पब्लिकेशन हाऊस, पुणे.<br>५. लांडगे, संजय, उपयोजित मराठी, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे.<br>६. यादव, आनंद, साहित्याची निर्मिती प्रक्रिया, मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे.<br>७. माळी, संदीप, पाटील समाधान (संपा.) लेखनकौशल्यः मुद्रितशोधन व सर्जनशील लेखन, प्रशांत पब्लिकेशन्स, जळगाव.<br>८. पाटील, शिरीष, कोळी नामदेव (संपा.) गझलनामा, प्रशांत पब्लिकेशन्स, जळगाव. |

**Title of the course : सांस्कृतिक अभ्यास आणि प्रवासवर्णने**

**Cultural Study and Travelogues**

**Course code**: MAR - 625

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

**Effective from AY:** 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| पूर्वपेक्षित : | विद्यार्थ्यांमध्ये सांस्कृतिक विषयांसंदर्भात जिज्ञासा असणे आवश्यक आहे. | |
| उद्दिष्टे : | राष्ट्रीय ऐक्यासाठी विविध प्रांत-प्रदेशांतील सांस्कृतिक विषयांचे अध्ययन करणे.<br>प्रवासाच्या माध्यमाने सांस्कृतिक, साहित्यिक, भाषिक विषयांचे आदान प्रदान करणे. | |
| अभ्यासक्रम : | | तासिका |
| | श्रेयांकन १ : सांस्कृतिक अभ्यास | |
| | १.१ संस्कृती : संकल्पना व स्वरूप | ३ |
| | १.२ सांस्कृतिक अभ्यास : महत्त्व आणि आवश्यकता | ३ |
| | १.३ भारतीय संस्कृतीविशेष | ३ |
| | १.४ संस्कृतीत होणारी कालानुक्रमे स्थित्यंतरे | ३ |
| | १.५ सांस्कृतिक अभ्यास आणि प्रवासवर्णन यांचा सहसंबंध | २ |
| | १.६ सांस्कृतिक अभ्यासासाठी प्रवासाची आवश्यकता | १ |
| | श्रेयांकन २ : प्रवासवर्णन | |
| | २.१ संकल्पना व स्वरूप | ७ |
| | २.२ आज इथे उद्या तिथे – उषा पाणंदीकर | ८ |
| | श्रेयांकन ३ व श्रेयांकन ४ : शैक्षणिक प्रवास, संस्कृती अध्ययन व प्रवासवर्णनपर लेखन | ३० |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण, विविध प्रांत-प्रदेशात तसेच राज्यात-देशात-परदेशात प्रवास इत्यादी. | |
| शैक्षणिक फलित: | १. विद्यार्थ्यांना देशातील विविध प्रांतांत प्रवास करून वैविध्यपूर्ण संस्कृतीचे दर्शन घेता येईल व आपल्या अनुभवांचे लेखन करता येईल.<br>२. विद्यार्थ्यांच्या सर्जनशील लेखनाला चालना मिळेल. | |
| संदर्भ ग्रंथ : | १. केळकर, दत्तात्रय, संस्कृती संगम, मनोहर ग्रंथमाला प्रकाशन, पुणे.<br>२. खेडेकर, विनायक विष्णू, गोवा संस्कृतिबंध, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे, २०१२.<br>३. कालेलकर, ना., गो., भाषा आणि संस्कृती, मौज प्रकाशन, मुंबई.<br>४. कुलकर्णी, गो. म., मराठी साहित्याची सांस्कृतिक पार्श्वभूमी.<br>५. साने, गुरुजी, भारतीय संस्कृती, नवता बुक वर्ल्ड, मुंबई, २०१२.<br>६. मडगांवकर, विनय, (संपा.) लोकसाहित्याचा अभ्यास संशोधन व आव्हाने, मराठी विभाग, गोवा विद्यापीठ, गोवा, २०१९.<br>७. सातोस्कर, बा., द., गोमंतक : प्रकृती व संस्कृती, शुभदा सरस्वत पब्लिकेशन्स, | |

| | |
|---|---|
| | पुणे, १९८२.<br>८. भवाळकर, तारा, संस्कृतीची शोधयात्रा, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे.<br>९. संत, दु. का., साहित्य आणि संस्कृती, अ. वि. गृह प्रकाशन पुणे 1966<br>१०. सावंत, वसंत, प्रवासवर्णन - एक वाङ्मयप्रकार, महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ.<br>११. INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S RESEARCH JOURNEY, Multidisciplinary International E-research Journal, PEER REFREED and INDEXED JOURNAL, SPECIAL ISSUE 12, ISSN – 2348-7143, 'Marathitil Prawasvarnane-Kal.Aaj aani Udya', December, 2016. |

**Title of the course: पर्यावरण आणि मराठी साहित्य**
**Environment and Marathi Literature**

**Course code**: MAR - 626
**Number of credits**: 4 Number of hours: 60
**Effective from AY:** 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| पूर्वापेक्षित : | पर्यावरणाचा मानवी जीवनावर असणारा प्रभाव आणि त्याचे महत्त्व समजून घेण्यासाठी साहित्याच्या पर्यावरणीय परिप्रेक्ष्यातून साहित्याभ्यासाची दृष्टी असणे आवश्यक आहे. | |
| उद्दिष्टे : | १. पर्यावरणविषयक विविध मुद्दे समजून घेऊन पर्यावरण आणि मानवी जीवनाचा सहसंबंध लक्षात घेणे.<br>२. साहित्यातील पर्यावरणीय विचार आत्मसात करणे. | |
| अभ्यासक्रम : | | तासिका |
| | श्रेयांकन १: साहित्यातील पर्यावरणीय अभ्यास | |
| | १.१ निसर्ग आणि साहित्य यांचा सहसंबंध | ४ |
| | १.२ लोकसाहित्यातील पर्यावरणीय विचार | २ |
| | १.३ मराठी साहित्यातील पर्यावरणीय संदर्भ (कथा, कादंबरी, नाटक, कविता इ.) आणि परंपरा | ६ |
| | १.४ साहित्यातील पर्यावरणीय अभ्यासाची आवश्यकता | ३ |
| | श्रेयांकन २ : कविता आणि ललित लेख | |
| | २.१ रानातल्या कविता – ना. धों. महानोर | ८ |
| | २.२ ऋतुचक्र – दुर्गा भागवत | ७ |
| | श्रेयांकन ३: कथा आणि कादंबरी | |
| | ३.१ बनगरवाडी – व्यंकटेश माडगुळकर | ८ |
| | ३.२ उदकाचिया आर्ती – मिलिंद बोकिल | ७ |
| | श्रेयांकन ४: आत्मचरित्र<br>चकवाचांदण – मारूती चितमपल्ली | १५ |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण इत्यादी. | |
| शैक्षणिक फलिते: | १. विद्यार्थ्यांना निसर्ग, पर्यावरण व साहित्य यांच्यातील सहसंबंध लक्षात येईल.<br>२. विद्यार्थ्यांच्या पर्यावरणविषयक जाणिवा अधिक समृद्ध होतील. | |
| संदर्भ ग्रंथ : | १. गायकवाड, विनोद, पर्यावरणीय साहित्य, स्वरूप आणि समीक्षा, अक्षरदीप प्रकाशन, कोल्हापूर.<br>२. व्हटकर, अर्जुन, मुक्या जंगलाची गर्जना, ग्रंथाली प्रकाशन, पुणे. | |

**Title of the course:** वृत्त, छंद आणि काव्याभ्यास

**Poetic Meters and Study of Poetics**

**Course code**: MAR- 627
**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60
**Effective from AY:** 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| पूर्वापेक्षित : | विद्यार्थ्यांना वृत्त व छंद यांची प्राथमिक जाण असणे आवश्यक. | |
| उद्दिष्टे : | १. मराठी कविता, कवितेचे घटक व पद्यप्रकारांची ओळख करून देणे.<br>२. वृत्त आणि छंद यांची ओळख करून देणे.<br>३. अभंग-ओवी या रचनाप्रकारांची ओळख करून देणे.<br>४. पद्यरचनेच्या आधारे वृत्तबध्द कवितेची ओळख करून देणे. | |
| अभ्यासक्रम : | | तासिका |
| | श्रेयांकन १ : काव्य परिचय | |
| | १.१. कवितेचे स्वरूप आणि संकल्पना | ५ |
| | १.२.कवितेचे घटक | ५ |
| | १.३. मराठीतील महत्त्वाच्या पद्यप्रकारांची ओळख | ५ |
| | श्रेयांकन २ : वृत्त आणि छंद | |
| | २.१ वृत्तांचे प्रकार – अक्षरगणवृत्त | ५ |
| | २.२ वृत्तांचे प्रकार - मात्रागणवृत्त | ५ |
| | २.३ छंद | ५ |
| | श्रेयांकन ३ : मध्ययुगीन मराठी कविता | |
| | ३.१ वृत्तबद्ध कविता – अक्षरगणवृत्त (नमुना उदाहरणे) | ५ |
| | ३.२ वृत्तबद्ध कविता – मात्रागणवृत्त (नमुना उदाहरणे) | ५ |
| | ३.३ छंदोबद्ध कविता (नमुना उदाहरणे) | ५ |
| | श्रेयांकन ४ : आधुनिक कविता | |
| | ४.१. मुक्तछंद | ४ |
| | ४.२ गझल | ४ |
| | ४.३ चारोळी आणि हायकू | ४ |
| | ४.४ गीतरचना | ३ |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण इत्यादी. | |
| शैक्षणिक फलित : | १. मराठी कविता, कवितेचे घटक, पद्यप्रकारांची ओळख होईल.<br>२. छंद आणि वृत्त यांचा सविस्तर परिचय होईल.<br>३. आधुनिक काव्यप्रकारांचा परिचय होईल | |
| संदर्भ ग्रंथ : | १. गणोरकर, प्रभा, (संपा.) व इतर वाङ्मयीन संज्ञा संकल्पना कोश, ग. रा. भटकळ | |

| | |
|---|---|
| | फौंडेशन, मुंबई, २००१,<br>२. रसाळ, सुधीर, कविता आणि प्रतिमा,मौज प्रकाशन, मुंबई, पहिली आवृत्ती, १९८२.<br>३. रसाळ, सुधीर, (संपा.) व इतर साहित्य अध्यापन आणि प्रकार, पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई, १९८७.<br>४. देशपांडे केजकर, प्रकाश, संत कविता एक दृष्टिकोन, स्वरूप प्रकाशन, पुणे, २००६.<br>५. नसिराबादकर, ल. रा., प्राचीन मराठी वाङ्मयाचा इतिहास, फडके प्रकाशन, दहावी आवृत्ती, मार्च,२०१३.<br>६. गंधारे, द. के., मराठी वाङ्मय प्रकार - स्वरूप, संकल्पना व वाटचाल, शब्दालय प्रकाशन, श्रीरामपूर, २०१७.<br>७. वाळंबे, मो.रा., सुगम मराठी व्याकरण, सुधारीत आवृत्ती, नितीन प्रकाशन, पुणे,२०००.<br>८. गोविलकर, लिला, मराठीचे व्याकरण स्वरूपविचार, मेहता पब्लिशिंग हाउस, पुणे. |

**Title of the course : व्यावसायिक मराठी**
**Professional Marathi**

**Course code**: MAR - 628
**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60
**Effective from AY:** 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| पूर्वापेक्षित - | मराठी भाषा आणि आधुनिक तंत्रज्ञान यांचे ज्ञान आवश्यक. | |
| उद्दिष्टे : | १. विद्यार्थ्यांचे मराठी भाषा लेखन, टंकलेखन व उच्चारण या क्षमता सुयोग्य बनवणे.<br>२. विद्यार्थ्यांना भाषाविषयक व्यवसाय आणि त्याला अनुरूप आधुनिक तंत्रज्ञान यांचा परिचय करून देणे. | |
| अभ्यासक्रम : | | तासिका |
| | श्रेयांकन १ : व्यावसायिक मराठी | |
| | १.१ संकल्पना, स्वरूप, महत्त्व व आवश्यकता | ४ |
| | १.२ भाषा आणि व्यवसाय | ४ |
| | १.३ व्यक्तिमत्व विकास आणि भाषिक विकास | ३ |
| | १.४ व्यावसायिक कौशल्ये आणि भाषिक कौशल्ये | ४ |
| | श्रेयांकन २ : भाषा आणि तंत्रज्ञान | |
| | २.१ मराठी भाषा आणि आधुनिक तंत्रज्ञानः परिचय व प्रात्यक्षिक | ५ |
| | २.२ मुद्रण : शुद्धलेखन नियम, समास, संगणकावर टंकलेखन | ५ |
| | २.३ लिप्यंतर, मुद्रितशोधन, विरामचिन्हे | ५ |
| | श्रेयांकन ३: मराठी उच्चार | |
| | ३.१ स्वर, व्यंजन, महाप्राण, अनुनासिक यांचे योग्य उच्चारण | ८ |
| | ३.२ ध्वनीमुद्रण : परिचय व प्रात्यक्षिक | ७ |
| | श्रेयांकन ४ : डिजिटल मिडिया: परिचय व प्रात्यक्षिक | |
| | ४.१ Wiki, Blog, Vlog, Flip E-Book, PPT | ३ |
| | ४.२ Google Apps : Translation, Transcript. | ३ |
| | ४.३ Voice over, Voice over Editing. | २ |
| | ४.४ Video recording and Editing, YouTube. | ४ |
| | ४.५ Documentary | ३ |
| | एकूण | ६० |
| अध्ययन पद्धती: | व्याख्यान, पावर पॉईन्ट सादरीकरण, स्टुडीओला भेट, प्रात्यक्षिक | |
| शैक्षणिक फलित : | १. भाषापूरक आधुनिक तंत्रज्ञानाचा परिचय होईल व भाषिक जाण येईल.<br>२. विद्यार्थ्यांना मराठी भाषेचे प्रत्यक्ष व्यवसायासाठी उपयोजन करता येईल. | |
| संदर्भ ग्रंथ : | १. ढवण, ग. शं, शुद्धलेखन पुस्तिका, सचिन प्रकाशन, सातारा.<br>२. वाळंबे, मो. रा, सुगम मराठी व्याकरण, नितिन प्रकाशन, पुणे.<br>३. जोशी, चंद्रहास, मराठी लेखन दर्शन, मेहता पब्लिकेशन हाऊस, पुणे. | |

| | |
|---|---|
| | ४. मराठी भाषा उगम आणि विकास, मेहता पब्लिकेशन  हाऊस, पुणे.<br>५. लांडगे, संजय, उपयोजित मराठी, दिलीपराज प्रकाशन, पुणे.<br>६. पाटील, आनंद, सृजनात्मक लेखन, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे.<br>७. भुर्के, शाम, सभेत कसे बोलावे, मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे.<br>८. परूळेकर, आशा, संभाषण चातुर्य, उन्मेश प्रकाशन, पुणे.<br>९. केळकर, अशोक, वैखरी, मॅजेस्टिक प्रकाशन, मुंबई.<br>१०. सारंग, विलास, सर्जनशोध आणि लिहिता लेखक, मौज प्रकाशन, मुंबई.<br>११. भागवत, यशोदा, बोलका कॅमेरा, मौज प्रकाशन, मुंबई.<br>१२. जोशी, श्रीपाद, संवादशास्त्र, संभव प्रकाशन, नागपूर.<br>१३. अकलुजकर, प्रसन्नकुमार, फिचर रायटिंग, श्रीविद्या प्रकाशन, पुणे.<br>१४. पीज, ॲलेज, लोकव्यवहार कौशल्ये, अनु. टोकेकर, विदुला, International Pty Ltd,  Australia. |

**<u>Title of the course: साहित्याचे प्रकारांतर आणि माध्यमांतर</u>**

**<u>Marathi Literature – Trans-Form and Trans-Media</u>**

**Course code**: MAR - 629

**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60

**Effective from AY:** 2022-2023

<table>
<tr><td>पूर्वापेक्षित :</td><td colspan="2">मराठी साहित्यप्रकार आणि माध्यमे यांची माहिती विद्यार्थ्यांना असणे आवश्यक आहे.</td></tr>
<tr><td>उद्दिष्टे :</td><td colspan="2">साहित्याच्या प्रकारांतर आणि माध्यमांतराचे तंत्र समजावून देऊन त्यांचा विविधांगी अभ्यास करण्याची क्षमता विकसित करणे.</td></tr>
<tr><td>अभ्यासक्रम :</td><td>श्रेयांकन १: साहित्याचे प्रकारांतर आणि माध्यमांतर<br>१.१ साहित्याचे प्रकारांतर : संकल्पना आणि स्वरूप<br>१.२ साहित्याच्या प्रकारांतराची आवश्यकता, महत्त्व, प्रक्रिया, अडचणी/आव्हाने<br>१.३ साहित्याचे माध्यमांतर : संकल्पना आणि स्वरूप<br>१.४ साहित्याच्या माध्यमांतराची आवश्यकता, महत्त्व, प्रक्रिया, अडचणी/आव्हाने<br><br>श्रेयांकन २ : प्रकारांतर - कादंबरी ते नाटक<br>२.१ महानंदा – जयवंत दळवी (कादंबरी)<br>२.२ गुंतता हृदय हे – शं. ना. नवरे (नाटक)<br><br>श्रेयांकन ३: माध्यमांतर – नाटक ते चित्रपट<br>३.१ नटसम्राट – वि. वा. शिरवाडकर (नाटक)<br>३.२ नटसम्राट (चित्रपट)<br><br>श्रेयांकन ४: माध्यमांतर – आत्मचरित्र ते चित्रपट<br>४.१ नाथ हा माझा (आत्मचरित्र)<br>४.२ ....आणि डॉ. काशिनाथ घाणेकर (चित्रपट)</td><td>तासिका<br><br>५<br>४<br>३<br>३<br><br><br>८<br>७<br><br>८<br>७<br><br>७<br>८</td></tr>
<tr><td></td><td>एकूण</td><td>६०</td></tr>
<tr><td>अध्यापन पद्धती:</td><td>व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण, इत्यादी.</td><td></td></tr>
<tr><td>शैक्षणिक फलित :</td><td>१. साहित्याचे प्रकारांतर आणि माध्यमांतर यांची आवश्यकता, महत्त्व तसेच प्रक्रिया विद्यार्थ्यांच्या लक्षात येईल.<br>२. विद्यार्थी साहित्याचे प्रकारांतर आणि माध्यमांतर करण्यास प्रवृत्त होतील.</td><td></td></tr>
<tr><td>संदर्भग्रंथ :</td><td colspan="2">१. कामत, कल्पना, मराठी कादंबऱ्यांची नाट्यरूपांतरणे, पॉप्युलर प्रकाशन, पुणे<br>२. हंडीभाग, भारत, साहित्याचे माध्यमांतर, हरनाई प्रकाशन, नांदेड.<br>३. देशमुख, शिवाजीराव, मराठी साहित्य – प्रकारांतर व माध्यमांतर, तुळजाभवानी महाविद्यालय, सोलापूर.<br>४. थोरात, राजेंद्र, साहित्यकृतीचे माध्यमांतर, संस्कृती प्रकाशन.<br>५. दादेगावकर, उमा, बॅरिस्टरची तीन रूपे, मॅजेस्टिक प्रकाशन, पुणे.</td></tr>
</table>

| | |
|---|---|
| | ६. डहाके, वसंत, दृष्यकला आणि साहित्य, लोकवाङ्मय गृह, पुणे.<br>७. दीक्षित, विजय, चित्रपट - एक कला, रेणुका प्रकाशन, पुणे. |

**Title of the course : वृत्तपत्रलेखन व संपादन कौशल्ये**
**Print Media and Editorial Skills**

**Course code**: MAR- 630
**Number of credits**: 4 **Number of hours**: 60
**Effective from AY:** 2022-2023

| | | |
|---|---|---|
| पूर्वापेक्षित : | विद्यार्थ्यांमध्ये वृत्तपत्र वाचन आणि पत्रकारीता या विषयी जिज्ञासा असायला हवी. सामाजिक, सांस्कृतिक, राजकीय क्रीडा, साहित्य या विषयी अभ्यासण्याची तयारी आवश्यक आहे. | |
| उद्दिष्ट्ये : | पत्रकारीता आणि संपादन कौशल्ये यांचा विद्यार्थ्यांना परिचय करून देणे.<br>पत्रकारीतेच्या क्षेत्रात कार्य करण्याची क्षमता विकसित करणे. | |
| अभ्यासक्रम : | श्रेयांकन १: वृत्तपत्र लेखन<br>१.१ वृत्तपत्र लेखनाचे स्वरूप<br>१.२ वृत्तपत्रीय लेखनाचे विविध विशेष<br>१.३ वृत्तपत्रीय लेखनाची भाषा<br><br>श्रेयांकन २ : बातमीचे विविध स्रोत<br>२.१ पत्रकार, वार्ताहर<br>२.२ वृत्तसंस्था (युएनआय, पीटीआय, एएनआय, रॉयटर्स, पीआयबी)<br>२.३ दूरदर्शन, आकाशवाणी, विविध समाजमाध्यमे<br>२.४ पीत पत्रकारिता व वृत्तपत्रीय नीतिमत्ता<br><br>श्रेयांकन ३ : वृत्तसंकलन<br>३.१. वर्तमानपत्र यंत्रणेतील विविध पदे<br>३.२ उपसंपादकाची कर्तव्ये व जबाबदाऱ्या<br>३.३ उपसंपादनाची प्रक्रिया<br>३.४ सहसंपादकाची कर्तव्ये व जबाबदाऱ्या<br><br>श्रेयांकन ४ : संपादकीय कर्तव्ये आणि पुरवणी लेखन<br>४.१ संपादकाचे कार्य आणि जबाबदाऱ्या<br>४.२ संपादकीय लेखन<br>४.३ अतिथी संपादक<br>४.४ स्तंभलेखन आणि त्याचे संपादन | तासिका<br>तासिका<br><br>५<br>५<br>५<br><br>४<br>३<br>३<br>५<br><br>३<br>४<br>४<br>४<br><br>५<br>४<br>२<br>४ |
| | एकूण | ६० |
| अध्यापन पद्धती : | व्याख्याने, चर्चासत्र, स्वाध्याय, पावर पॉईन्ट सादरीकरण, इत्यादी. | |
| शैक्षणिक फलित : | १. विद्यार्थ्यांना वर्तमानपत्राच्या स्वरूपाची कल्पना येईल.<br>२. बातमीचे विविध स्रोत, वृत्तसंकलन, संपादकीय कर्तव्ये आणि पुरवणी लेखन या विषयी विद्यार्थ्यांना ज्ञान प्राप्त होईल. | |
| संदर्भ ग्रंथ : | १. प्रभुदेसाई, वि. (संपा.) व घवी, रवींद्र . बा. गोमंतकीय मराठी वाङ्मयाचा इतिहास (खंड १), | |

| | |
|---|---|
| | गोमंतक मराठी अकादमी.<br>२. कुळकर्णी, वा. ल. मराठी ज्ञानप्रसारक : इतिहास आणि वाङ्मविचार, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई,१९६५.<br>३. ढवळीकर, संजय, अग्रलेख, जागर प्रकाशन, गोवा,२०१५.<br>४. ढवळीकर, संजय, संपादकीय, जागर प्रकाशन, गोवा, २०१५.<br>५. वाळवेकर, समीरण, आजच्या ठळक बातम्या, राजहंस प्रकाशन, पुणे.<br>६. प्रभू, परेश, गोमंतकीय मराठी पत्रकारितेचा इतिहास, गोवा मराठी अकादमी, गोवा. २०२१.<br>७. नसिराबादकर, ल. रा., व्यावहारिक मराठी, फडके प्रकाशन, कोल्हापूर , १९९३. |

## <u>Discipline Specific Dissertation</u>

**Course code**: MAR-651

| | |
|---|---|
| MAR-651 | Discipline Specific Dissertation |